Class: B.A. 3rd year	**Course Code: MUSA301PR & MUSA302PR**
Subject: Music (Vocal/Instrumental)	**Course Type:** Skill Enhancement Course-III and IV **Course Name:** Presentation and Documentation-III and IV

MUSIC

(Presentation and Documentation-III and IV)

Lesson : 1 - 12

Dr. Mritunjay Sharma

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय	पृ. सं.
1		विषय सूची	ii
2		प्राक्कथन	iii
3		पाठ्यक्रम	iv
4	इकाई - 1	देश भक्ति गीत भाग 1 (गायन के संदर्भ में)	1
5	इकाई - 2	देश भक्ति गीत भाग 2 (गायन के संदर्भ में)	18
6	इकाई - 3	देश भक्ति गीत भाग 3 (गायन के संदर्भ में)	30
7	इकाई - 4	पावर प्वाइंट प्रस्तुति (Power Point Presentation)	42
8	इकाई - 5	तबला वाद्य का परिचय	61
9	इकाई - 6	हारमोनियम वाद्य का परिचय	72
10	इकाई - 7	देश भक्ति गीतों की धुनें भाग 1 (वाद्य संगीत)	82
11	इकाई - 8	देश भक्ति गीतों की धुनें भाग 2 (वाद्य संगीत)	94
12	इकाई - 9	देश भक्ति गीतों की धुनें भाग 3 (वाद्य संगीत)	104
13	इकाई - 10	भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति	114
14	इकाई - 11	भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति	129
15	इकाई - 12	भारतरत्न पं. रवि शंकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति	143
16		महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार	161

प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA301PR तथा MUSA302PR में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की क्रियात्मक परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में गायन के संदर्भ में देश भक्ति गीत भाग 1 (हिन्द देश के निवासी तथा जय जन भारत) का वर्णन किया गया है।

इकाई 2 में गायन के संदर्भ में देश भक्ति गीत भाग 2 (सारे जहाँ से अच्छा तथा वंदे मातरम्) का वर्णन किया गया है।

इकाई 3 में गायन के संदर्भ में देशभक्ति गीत भाग 3 (जन गण मन तथा अपना प्यारा हिंदुस्तान) का वर्णन किया गया है।

इकाई 4 में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियां तथा उसे बनाने में किन बातों का ध्यान रखा जाता है, का वर्णन किया गया है।

इकाई 5 में तबला वाद्य का परिचय, उसके अंगों का वर्णन किया गया है ।

इकाई 6 में हारमोनियम वाद्य का परिचयए उसके अंगों का वर्णन किया गया है ।

इकाई 7 में वादन के संदर्भ में देश भक्ति गीतों की धुनें भाग 1 (हिन्द देश के निवासी तथा जय जन भारत) का वर्णन किया गया है।

इकाई 8 में वादन के संदर्भ में देश भक्ति गीतों की धुनें भाग 2 (सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा तथा वंदे मातरम्) का वर्णन किया गया है।

इकाई 9 में वादन के संदर्भ में देश भक्ति गीतों की धुनें भाग 3 (जन गण मन तथा आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान) का वर्णन किया गया है। ।

इकाई 10 में भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति कैसे बनाते हैं, का वर्णन किया गया है।

इकाई 11 भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति कैसे बनाते हैं, का वर्णन किया गया है।

इकाई 12 में भारतरत्न पं. रवि शंकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति कैसे बनाते हैं, का वर्णन किया गया है।

प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

COURSE CODE MUSA301PR
SEC-III
B.A.3rd Year, SKILL ENHANCEMENT COURSE-III
HINDUSTANI MUSIC(VOCAL/INSTRUMENTAL)

Title-Presentation and Documentation-III

Credits-4

1. Power point presentation by the students on the Contemporary Classical Music Performance.

2. Basic technique of Harmonium and Tabla Playing.

3. Visit to All India Radio/Doordarshan, State festival and TV Channels.

COURSE CODE MUSA302PR
SEC-IV
B.A.3rd Year, SKILL ENHANCEMENT COURSE-IV
HINDUSTANI MUSIC(VOCAL/INSTRUMENTAL)

Title-Presentation and Documentation-IV

Credits-4

1. Composing Music for Patriotic songs.

2. Powerpoint presentation on the Life and Contributions of great Musicians.

3. Attending Music Conferences/Listening of Radio SangeetSammelans and listening of Audio/Visual adds National Programmes of Music and writing reviews or reports of the same.

इकाई-1
देश भक्ति गीत भाग 1 (गायन)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य तथा परिणाम
1.3	देश भक्ति गीत तथा उनकी स्वरलिपियां
1.3.1	देशभक्ति गीत (हिन्द देश के निवासी) 1
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.3.2	देशभक्ति गीत (जय जन भारत जन मन अभिमत) 2
	स्वयं जांच अभ्यास 2
1.4	सारांश
1.5	शब्दावली
1.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.7	संदर्भ
1.8	अनुशंसित पठन
1.9	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में देशभक्ति संबंधी गीतों को प्रस्तुत किया गया है। देशभक्ति का सामान्य अर्थ है किसी व्यक्ति के अपनी मातृभूमि के प्रति अनुराग। देशभक्ति का भाव मातृभूमि के नागरिकों को निस्वार्थ भाव से अपनी मातृभूमि के लिए कार्य करने और इसे अच्छा बनाने के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्र प्रथम, मातृभूमि के हित को पहले रखना ही सच्ची देशभक्ति है। केवल युद्ध के समय ही नहीं अपितु राष्ट्र को सक्षम बनाने में किया गया हर प्रयास देशभक्ति के अंतर्गत आता है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी अवस्था के व्यक्ति में राष्ट्रभक्ति की भावना भरी जा सकती है। राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीत विशेष भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। यह गीत अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध किए गए। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी देशभक्ति संबंधी गीतों के विषय में जान सकेगें तथा गा सकेगें।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को देशभक्ति के गीतों की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति गीतों (हिन्द देश के निवासी तथा जय जन भारत) को सही ढंग से गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति गीतों (हिन्द देश के निवासी तथा जय जन भारत) को स्वरलिपि में लिख पाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी देशभक्ति के गीतों के विषय में जान पाएगा।

- विद्यार्थी देशभक्ति के गीतों (हिन्द देश के निवासी तथा जय जन भारत) को सही ढंग से गाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी देशभक्ति के गीतों (हिन्द देश के निवासी तथा जय जन भारत) को स्वरलिपि में लिख पाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकासहोगा।
- विद्यार्थी में देशभक्ति के गीतों (हिन्द देश के निवासी तथा जय जन भारत) को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

1.3 देशभक्ति गीत तथा उनकी स्वरलिपियां

1.3.1 देशभक्ति गीत 1 - हिन्द देश के निवासी

प्रस्तुत गीत में भारतवर्ष की भौगोलिक परिस्थितियाँ, पेड़, पौधे, लोगों के रहन-सहन, पशुओं, पक्षियों, नदियों आदि विविधताओं का उल्लेख किया गया है। गीतकार ने भारत की इन्हीं विविधताओं को अपने शब्दों में, अनेकता में एकता की भावना को लेकर लिखा है। गीत के लेखक विनय चंद्र मोदगल हैं।

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग-रूप, वेश-भाषा चाहे अनेक हैं ।।
(1) बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली
प्यारे प्यारे फूल गूंथे माला में एक हैं।।
(2) कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।।
(3) गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी
जाके मिल गई सागर में, हुई सब एक हैं।।

लय: मध्य ताल: कहरवा

x 1	2	3	4	0 5	6	7	8
स्थायी							
सा	-रे	सा	-रे	सा	-रे	सानॖी	पॖ
हि	न्द	दे	ऽश	के	ऽनि	वाऽ	सी
-	पॖनॖी	-सा	-नि	सारे	-रे	रे	-
ऽ	सभी	ऽज	ऽन	एऽ	ऽक	हैं	ऽ
म	-म	म	मग	रेग	-ग	रेसा	सानि
रं	ऽग	रू	ऽप	वेऽ	ऽश	माऽ	षाऽ
-	नॖीसा	नॖीसा	रेंरे	सा	-सा	सा	-
ऽ	चाऽ	ऽहे	ऽअ	ने	ऽक	हैं	ऽ
अंतरा							
-	ग-	रेग	-म	प	-प	प	प
ऽ	बेऽ	ऽला	ऽगु	ला	ऽब	जू	ही
-	प	-प	-ध	ग	प	म	ग
ऽ	चं	ऽपा	ऽच	मे	ऽ	ली	ऽ

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
-	म	ग-रे	सासा	नी	-नी	सरे	रेग
ऽ	प्या	रेप्या	ऽरे	फू	ऽल	गूँऽ	थेऽ
-	म	गरे	सासा	सा	-सा	सा	-
ऽ	मा	ऽला	ऽमें	ए	ऽक	हैं	ऽ

अंतरा

-	ग-	रेग	-म	प	-प	प	प
-	को	यल	की	कू	क	न्या	री
-	प	-प	-ध	ग	प	म	ग
-	प	पीहे	की	टे	र	प्या	री
-	म	ग-रे	सासा	नी	-नी	सरे	रेग
-	गा	रही	त	रा	ना	बुल	बुल
-	म	गरे	सासा	सा	-सा	सा	-
-	रा	गम	गर	ए	क	है	-
सा	-रे	सा	-रे	सा	-रे	सानी	प़
हि	न्द	दे	ऽश	के	ऽनि	वाऽ	सी

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
-	प़नी	-सा	-नि	सारे	-रे	रे	-
ऽ	सभी	ऽज	ऽन	एऽ	ऽक	हैं	ऽ
-	ग-	रेग	-म	प	-प	प	प
-	गं	गाय	मुना	ब्र	ह्म	पु	त्र
-	प	-प	-ध	ग	प	म	ग
-	कृ	-ष्	णा	का	वे	-	री
-	म	ग-रे	सासा	नी	-नी	सरे	रेग
-	जा	केमि	लग	ईं	सा	गर	में
-	म	गरे	सासा	सा	-सा	सा	-
-	हु	ईस	ब	ए	क	हैं	-
सा	-रे	सा	-रे	सा	-रे	साऩी	प़
हि	न्द	दे	ऽश	के	ऽनि	वाऽ	सी
-	प़नी	-सा	-नि	सारे	-रे	रे	-
ऽ	सभी	ऽज	ऽन	एऽ	ऽक	हैं	ऽ

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
म	-म	म	मग	रेग	-ग	रेसा	सानि
रं	ऽग	रू	ऽप	वेऽ	ऽश	माऽ	षाऽ
-	ऩीसा	ऩीसा	रेरे	सा	-सा	सा	-
-	ऩीसा	ऩीसा	रेरे	सा	-सा	सा	-
ऽ	चाऽ	ऽहे	ऽअ	ने	ऽक	हैं	ऽ

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

1.1 प्रस्तुत गीत किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

1.2 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

क) 6

ख) 7

ग) 8

घ) 10

1.3 प्रस्तुत गीत, अनेकता में एकता की भावना को लेकर लिखा गया है।

क) गलत

ख) सही

1.4 हिन्द देश के निवासी गीत को किसने लिखा है।

क) विनय चंद्र मोदगल

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) सुमित्रानंदन पंत

1.3.2 देशभक्ति गीत 2 - जय जन भारत

इस गीत को सुमित्रानंदन पंत द्वारा लिखा गया है। इस गीत में भारत के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की गई है और भारत देश की प्रमुख विशेषतायें बताई गई हैं। हिमालय पर्वत और गंगा का वर्णन किया है। भारत को एक जीवित प्रतिमा बताया गया है। ऐसी धरती, जिसके माथे पर हिमालय पर्वत सुशोभित हैं, जिसकी कटि में विन्ध्याचल पर्वत और चरणों में अथाह जलराशि लिये सागर है, की प्रशंसा की गई है। भारत की इस भूमि पर हरे-भरे खेतों, नदियों और काम करते हुए लोगों की महिमा को बताकर/गाकर, प्रकृति का सम्मान किया गया है।

जय जन भारत जन मन अभिमत   जन गण तंत्र विधाता

1- गौरव भाल हिमालय उज्जवल हृदय हार गंगा जल

कटि विंध्यांचल सिंधु चरण तल महिमा शाश्वत गाता

2- हरे खेत लहरें नद निर्झर, जीवन शोभा उर्वर

विश्व कर्मरत कोटि बाहुकर, अगणित पद ध्रुव पथ पर

3- प्रथम सभ्यता ज्ञाता, साम ध्वनित गुण गाता

जय नव मानवता निर्माता, सत्य अहिंसा दाता

जय हे, जय हे, जय हे, शांति अधिष्ठाता

लय: मध्य **ताल: कहरवा**

x 1	2	3	4	0 5	6	7	8
स्थायी							
ग	ग	म	प	प	-	प	प
ज	य	ज	न	भा	ऽ	र	त
प	प	ध	प	म	प	म	ग
ज	न	म	न	अ	भि	म	त
-	गग	-म	प	प	-	सां	प
ऽ	जन	-ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
ध	-	ध	-	म	-	-	-
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	प	ध	सां	-	ध	प
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
प	-	प	-	-	-	-	-
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
अंतरा							
प	-	प	प	सां	-	सां	सां
गौ	ऽ	र	व	भा	ऽ	ल	हि
सां	-	रें	गं	सां	-	रें	रें
मा	ऽ	ल	य	उ	ऽ	ज्जव	ल
रें	रें	रें	रें	-	गं	सारें	सांनि
हृ	द	य	हा	ऽ	र	गंऽ	ऽऽ
नी	-	नी	नी	धनी	सांनी	ध	प
गा	ऽ	ज	ल	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
-	म	प	प	प	-	प	प
ऽ	क	टि	विं	ध्या	ऽ	च	ल
रें	-	सां	नी	सां	ध	ध	ध
सिं	ऽ	धु	च	र	ण	त	ल
-	म	म	म	ध	ध	ध	ध
ऽ	म	हि	मा	शा	ऽ	श्व	त

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
सां	-	सां	-	प	-	-	-
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	-	प	म	ग	रे	सा	-
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	प	-	प	प	ध
प्र	थ	म	स	ऽ	भ्य	ता	ऽ
ध	नी	नी	-	-	-	-	-
ज्ञा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी
सा	ऽ	म	ध्व	नि	त	गु	ण
रें	-	सां	-	-	नी	ध	प
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रें	-	सां	-	-	-	-	-
गा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
गं	गं	गं	गं	गं	-	गं	गं

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
ज	य	न	व	मा	ऽ	न	व
गं	-	गं	सां	रें	-	रें	-
ता	ऽ	नि	र	मा	ऽ	ता	ऽ
रें	-	रें	रें	रें	-	सां	नी
स	ऽ	त्य	अ	हिं	ऽ	सा	ऽ
रें	-	सां	-	-	-	-	-
दा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
						प	प
						ज	य
सां	-	-	-	-	-	प	प
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य
रें	-	-	-	-	-	प	प
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य
गं	-	-	-	-	-	-	-
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

x 1	2	3	4	0 5	6	7	8
गं	-	रें	सां	रें	-	सां	नी
शां	ऽ	ति	अ	धि	ऽ	ष्ठा	ऽ
सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा
ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	ग	म	प	प	-	प	प
ज	य	ज	न	भा	ऽ	र	त
प	प	ध	प	म	प	म	ग
ज	न	म	न	अ	भि	म	त
-	गग	म	प	प	-	सां	प
ऽ	जन	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
ध	-	ध	-	म	-	-	-
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	प	ध	सां	-	ध	प
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
प	-	प	-	-	-	-	-

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
प	-	प	-	-	-	-	-
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	प	प	-	प	प
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
ध	-	ध	-	-	-	-	-
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	ध	ध	ध	ध	-	ध	ध
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
नी	-	नी	-	-	-	-	-
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
नी	नी	नी	नी	नी	-	नी	नीरें
ज	न	ग	ण	तं	ऽ	त्र	वि
(रें)	सां	सां	-	-	-	-	-
धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 2

1.5 प्रस्तुत गीत किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

1.6 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

क) 6

ख) 7

ग) 8

घ) 10

1.7 इस गीत में भारत को एक जीवित प्रतिमा बताया गया है।

क) गलत

ख) सही

1.8 जय जन भारत जन मन अभिमत गीत को किसने लिखा है।

क) सुमित्रानंदन पंत

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) विनय चंद्र मोदगल

1.4 सारांश

राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीत विशेष भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। यह गीत अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध किए गए। प्रस्तुत गीतों में भारत के प्रति अपनी

श्रद्धा व्यक्त की गई है और भारत देश की प्रमुख विशेषतायें बताई गई हैं। भारत को एक जीवित प्रतिमा बताया गया है। भारतवर्ष की भौगोलिक परिस्थितियाँ, पेड़, पौधे, लोगों के रहन-सहन, पशुओं, पक्षियों, नदियों आदि विविधताओं का उल्लेख किया गया है तथा उनकी महिमा को बताकर/गाकर, प्रकृति का सम्मान किया गया है। । यह गीत कहरवा ताल में निबद्ध है।

1.5 शब्दावली

- कहरवा: कहरवा आठ मात्रा की एक ताल है जो मुख्य रूप से तबला वाद्य पर बजाई जाती है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- मध्य लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय ना तो धीमी हो ना बहुत तेज गति में चले तो उसे मध्य लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 उत्तर: घ)

1.2 उत्तर: ग)

1.3 उत्तर: ख)

1.4 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 2

1.5 उत्तर: घ)

1.6 उत्तर: ग)

1.7 उत्तर: ख)

1.8 उत्तर: क)

1.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

1.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक देशभक्ति गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 2. किसी एक देशभक्ति गीत की स्वरलिपि को लिखिए।

प्रश्न 3. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की स्वरलिपि को लिखिए।

इकाई-2
देश भक्ति गीत भाग 2 (गायन)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
2.1	भूमिका
2.2	उद्देश्य तथा परिणाम
2.3	देश भक्ति गीत तथा उनकी स्वरलिपियां
2.3.1	देशभक्ति गीत (सारे जहाँ से अच्छा) 1
	स्वयं जांच अभ्यास 1
2.3.2	देशभक्ति गीत (वंदे मातरम्) 2
	स्वयं जांच अभ्यास 2
2.4	सारांश
2.5	शब्दावली
2.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.7	संदर्भ
2.8	अनुशंसित पठन
2.9	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में देशभक्ति संबंधी गीतों को प्रस्तुत किया गया है। देशभक्ति का सामान्य अर्थ है किसी व्यक्ति के अपनी मातृभूमि के प्रति अनुराग। देशभक्ति का भाव मातृभूमि के नागरिकों को निस्वार्थ भाव से अपनी मातृभूमि के लिए कार्य करने और इसे अच्छा बनाने के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्र प्रथम, मातृभूमि के हित को पहले रखना ही सच्ची देशभक्ति है। केवल युद्ध के समय ही नहीं अपितु राष्ट्र को सक्षम बनाने में किया गया हर प्रयास देशभक्ति के अंतर्गत आता है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी अवस्था के व्यक्ति में राष्ट्रभक्ति की भावना भरी जा सकती है। राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीत विशेष भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। यह गीत अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध किए गए। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी देशभक्ति संबंधी गीतों के विषय में जान सकेगें तथा गा सकेगें।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को देशभक्ति के गीतों की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति गीतों (सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा तथा वंदे मातरम्) को सही ढंग से गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति गीतों (सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा तथा वंदे मातरम्) को स्वरलिपि में लिख पाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति गीतों (सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा तथा वंदे मातरम्) को उचित लय और ताल में गाने क्षमता विकसित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी देशभक्ति के गीतों के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी देशभक्ति के गीतों (सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा तथा वंदे मातरम्) को सही ढंग से गाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी देशभक्ति के गीतों (सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा तथा वंदे मातरम्) को स्वरलिपि में लिख पाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में देशभक्ति के गीतों को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।
- विद्यार्थी में देशभक्ति गीतों (सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा तथा वंदे मातरम्) को उचित लय और ताल में गा पायेंगे।

2.3 देश भक्ति गीत तथा उनकी स्वरलिपियां

2.3.1 देश भक्ति गीत 1 - सारे जहाँ से अच्छा

'सारे जहां से अच्छा' देशभक्ति गीत मुहम्मद इक़बाल द्वारा लिखा गया है। लगभग 1904 में लिखे गये इस गीत में भारत जिसे हिन्दुस्तान भी कहा जाता है का सुंदर वर्णन किया गया है। प्रस्तुत गीत में भारतवर्ष की भौगोलिक परिस्थितियों, नदियों, धर्मों आदि विविधताओं का उल्लेख किया गया है। गीतकार ने भारत की इन्हीं विविधताओं को, यहां की संस्कृति को अपने शब्दों में लिखा है।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।

हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा।।

पर्वत वो सबसे ऊँचा, हम साया आसमाँ का।

वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।

गोदी में खेलती हैं, इसकी हजारों नदियाँ।

गुलशन हैं जिनके दम से, रश्के जिना हमारा।।

मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।

हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।

।

लय: द्रुत ताल: कहरवा

स्थायी

x		0		x		0	
						--	साऽ
						ऽऽ	सा-
रेम	--	पध	-म	पध	ध-	--	प-
रेऽ	ऽऽ	जहाँ	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽऽ	हिऽ
मप	-म	प-	-सां	धप	म-	--	सां-
न्दोऽ	ऽस	तांऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	हम
नांनि	-ध	नि-	-ध	निरें	सा-	--	ध-
बुल	ऽबु	लेऽ	ऽहैं	उस	कीऽ	ऽऽ	वोऽ
पप	-म	प-	-सां	धप	म-	--	सां-
गुल्	ऽसि	तांऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	सा

रेम	--	पध	-म	पध	ध-	--	प-
रेऽ	ऽऽ	जहां	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽऽ	हिऽ
मप	-म	प-	-सां	धप	म-	--	--
न्दोऽ	ऽसि	तांऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	ऽऽ
अन्तरा							
सां-	-सां	धम	-ध	सां-	सां-	--	धसां
वऽ	ऽत	वोस	बसे	ऊंऽ	चाऽ	ऽऽ	हम
रें-	--	सांरें	गंरे	सांनि	ध-	ध-	--
साऽ	ऽऽ	याआ	ऽस	मांऽ	काऽ	ऽऽ	ऽऽ
रे-	-सां	निसां	-नी	धनि	धप	--	प-
संऽ	ऽत	रीऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	बांऽ
मप	-म	प-	-सां	धप	म‘-	- -	- -
पाऽ	ऽस	बाऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	ऽ ऽ
रेम	-म	पध	-म	पध	ध-	--	प-
रेऽ	ऽऽ	जहां	ऽसे	अऽ	च्छाऽ	ऽऽ	हिऽ
मप	-म	प-	-सां	धप	म-	--	--
न्दोऽ	ऽस	तांऽ	ऽह	माऽ	राऽ	ऽऽ	ऽऽ

अन्य अन्तरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

2.1 प्रस्तुत गीत किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

2.2 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

क) 6

ख) 7

ग) 8

घ) 10

2.3 प्रस्तुत गीत, में हमारे देश भारत को सारे जहाँ से अच्छा कहा गया है।

क) गलत

ख) सही

2.4 सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा, गीत को किसने लिखा है।

क) मुहम्मद इक़बाल

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) सुमित्रानंदन पंत

2.3.2 देशभक्ति गीत 2 - वंदेमातरम्

आदरणीय बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखे गए उपन्यास 'आनन्द मठ' में रचित यह रचना, भारत का राष्ट्रीय गीत है 'वंदेमातरम्'। इसे 1882 लिखा गया था। यह मूल रूप से बंगला व संस्कृत दो भाषाओं में लिखा गया था। राष्ट्रीय अवसरों में राष्ट्रीय गीत को गाया जाता है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की एक सभा, जो1896 में हुई थी, में सर्वप्रथम इसे गाया गया। वंदेमातरम्, स्वतंत्रता संग्राम का मुख्य नारा रहा।

गीत: वंदेमातरम्

रचना: बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्

सुजलां सुपफलां, मलयज शीतलाम्

शस्य श्यामलां मातरम् वंदे मातरम्।

शुभ्र-ज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्

फुल्ल-कुसुमितां-द्रुम-दल शोभिनीम्।

सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्

सुखदां, वरदां, मातरम्

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्

गायन शैली: अनिबद्ध

स्थायी

सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
म	प	-नी	सांनी	सां-	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-

सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
म	प	-नी	सांनी	सां-	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
सारें	नि-	धप	-प	पध	म	गरे	-रे
सुज	ला-	--	-म	सुफ	ला	--	-म्
रेप	म-	गरे	-ग	सा	-	-	-सा
मल	यज	शी-	-त	ला	-	-	-म
सा	रेम	पम	प	-प	नीध	प	-
शस्य	श्या	-म	लां	-मा	-त	रम	-
म	प	-नी	सांनी	सां	-	-	-
वं	दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-

अन्तरा

म	प	नी	नी	नीनी	सांनी	सां	-नी
शु	भ्र	ज्यो	त्स्ना	पुल	कित	या	-मि
सां	-	नी	नीनी	सांनी	सां	सारें	सांनी
नीम्	-	पुफ	ल्लकु	सुमि	त	द्रुम	दल
नीध	नीध	प	-	रेंरे	मग	रे	-
शो-	-भि	नीम्	-	सुहा	-सि	नीम्	-
रेनी	धनी	ध	-ध	प	-	मप	नी
सुम	धुर	भा-	-षि	णीम्	-	सुख	दां
नीनी	नी	-नी	सांनी	सां	-	म	प
वर	दां	-मा	-त	रम्	-	वं	दे
-नी	सांनी	सां	-	-	-	म	प
-मा	-त	रम्	-	-	-	वं	दे
-नि	सांनि	सां	-	-	-		
-मा	-त	रम्	-	-	-		
सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-

म	प	-नी	सांनी	सां-	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-
म	प	-नी	सांनी	सां-	-	-	-
व	न्दे	-मा	-त	रम्	-	-	-

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 2

2.5 प्रस्तुत गीत मूल रूप से कितनी भाषाओं में लिखा गया था।

क) 5

ख) 3

ग) 1

घ) 2

2.6 वंदे मातरम्, गीत कब लिखा गया था।

क) 1857

ख) 1947

ग) 1882

घ) 1906

2.7 वंदे मातरम्, गीत किस उपन्यास का भाग है।

क) रामायण

ख) आनन्द मठ

ग) महाभारत

घ) सामवेद

2.8 वंदे मातरम्, गीत को किसने लिखा है।

क) बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) विनय चंद्र मोदगल

2.4 सारांश

राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीत विशेष भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। यह गीत अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध किए गए। प्रस्तुत गीतों में भारत को माता के समान मान गया है तथा भारत देश की विशेषतायें बताई गई हैं। भारत को एक जीवित मां बताया गया है तथा संपूर्ण विश्व में सबसे अच्छा बताया गया है। भारतवर्ष के लोगों के रहन-सहन, पशुओं, पक्षियों, नदियों आदि विविधताओं का उल्लेख किया गया है तथा उनकी महिमा को बताकर सम्मान किया गया है।

2.5 शब्दावली

- कहरवा: कहरवा आठ मात्रा की एक ताल है जो मुख्य रूप से तबला वाद्य पर बजाई जाती है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को ‘लय’ कहा जाता है।
- अनिबद्ध: ताल रहित गायन/वादन
- मध्य लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय ना तो धीमी हो ना बहुत तेज गति में चले तो उसे मध्य लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 उत्तर: घ)

2.2 उत्तर: ग)

2.3 उत्तर: ख)

2.4 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 2

2.5 उत्तर: घ)

2.6 उत्तर: ग)

2.7 उत्तर: ख)

2.8 उत्तर: क)

2.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

2.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक देशभक्ति गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 2. किसी एक देशभक्ति गीत की स्वरलिपि को लिखिए।

प्रश्न 3. अनिबद्ध रूप से किसी एक देशभक्ति गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 5. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की स्वरलिपि को लिखिए।

इकाई-3
देश भक्ति गीत 3 (गायन)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य तथा परिणाम
3.3	देश भक्ति गीत तथा उनकी स्वरलिपियां
3.3.1	देशभक्ति गीत (जन गण मन) 1
	स्वयं जांच अभ्यास 1
3.3.2	देशभक्ति गीत 2
	स्वयं जांच अभ्यास 2
3.4	सारांश
3.5	शब्दावली
3.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.7	संदर्भ
3.8	अनुशंसित पठन
3.9	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में देशभक्ति संबंधी गीतों को प्रस्तुत किया गया है। देशभक्ति का सामान्य अर्थ है किसी व्यक्ति के अपनी मातृभूमि के प्रति अनुराग। देशभक्ति का भाव मातृभूमि के नागरिकों को निस्वार्थ भाव से अपनी मातृभूमि के लिए कार्य करने और इसे अच्छा बनाने के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्र प्रथम, मातृभूमि के हित को पहले रखना ही सच्ची देशभक्ति है। केवल युद्ध के समय ही नहीं अपितु राष्ट्र को सक्षम बनाने में किया गया हर प्रयास देशभक्ति के अंतर्गत आता है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी अवस्था के व्यक्ति में राष्ट्रभक्ति की भावना भरी जा सकती है। राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीत विशेष भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। यह गीत अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध किए गए। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी देशभक्ति संबंधी गीतों के विषय में जान सकेगें तथा गा सकेगें।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को देशभक्ति के गीतों की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति गीतों (जन गण मन अधिनायक तथा आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान) को सही ढंग से गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति गीतों (जन गण मन अधिनायक तथा आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान) को स्वरलिपि में लिख पाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी देशभक्ति के गीतों के विषय में जान पाएगा।

- विद्यार्थी देशभक्ति के गीतों (जन गण मन अधिनायक तथा आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान) को सही ढंग से गाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी देशभक्ति के गीतों (जन गण मन अधिनायक तथा आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान) को स्वरलिपि में लिख पाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकासहोगा।
- विद्यार्थी में देशभक्ति के गीतों (जन गण मन अधिनायक तथा आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान) को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

3.3 देशभक्ति गीत तथा उनकी स्वरलिपियां

3.3.1 देशभक्ति गीत 1 - जन गण मन

प्रस्तुत गीत भारत का राष्ट्रगान है। राष्ट्रगान की रचना रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बंगाली भाषा में की जिसमें संस्कृत मिश्रित की गई थी। राष्ट्रगान के बोल तथा उसका संगीत, सन् 1911 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने स्वयं तैयार किये थे। भारत की संविधान सभा में ‘जन गण मन’ के पहले छंद को 24 जनवरी, 1950 को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया था। राष्ट्रगान को विशिष्ट अवसरों पर गाया जाता है। राष्ट्रगान का अंत ‘जय हे जय हे जय जय जय जय हे’ से किया जाता है।

गीत: जन गण मन

लेखक व संगीतकार: रवीन्द्र नाथ टैगौर

जन गण मन अधिनायक जय हे,

भारत भाग्य विधाता।

पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा,

द्राविड़ उत्कल बंग

विंध्य हिमाचल यमुना गंगा,

उच्छल जलधि तरंग

तब शुभ नामे जागे,

तब शुभ आशिष मांगे

गाहे तब जय गाथा।

जन गण मंगलदायक जय हे,

भारत भाग्य विधाता।

जय हे, जय हे, जय हे,

जय जय जय जय हे

ज	न	ग	ण	म	न	अ	धि	ना	ऽ	य	क	ज	य	हे	ऽ,
सा	रे	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	-	ग	ग	रे	ग	म	-
भा	-	र	त	भा	ऽ	ग्य	वि	धा	-	ता	ऽ	ऽ	ऽ	पं	ऽ
ग	-	ग	ग	रे	-	रे	रे	ऩी	रे	सा	-	-	-	सा	-
जा	-	ब	सिं	-	ध	गु	ज	रा	-	त	म	रा	-	ठा	-
प	-	प	प	-	प	प	प	प	-	प	प	म'	ध	प	-

द्रा	-	वि	ड़	उ	त्	क	ल	बं	-	ग	-	-	-	-	-
म	-	म	म	म	-	म	ग	रे	म	ग	-	-	-	-	-
विं	-	ध्य	हि	मा	-	च	ल	य	मु	ना	-	गं	-	गा	-
ग	-	ग	ग	ग	-	ग	रे	प	प	प	-	म	-	म	-
उ	-	च्छ	ल	ज	ल	धि	त	रं	-	ग	-	-	-	-	-
ग	-	ग	ग	रे	रे	रे	रे	ऩी	रे	सा	-	-	-	-	-
त	व	शु	भ	ना	-	में	-	जा	-	गे	-	-	-	-	-
सा	रे	ग	ग	ग	-	ग	-	रे	ग	म	-	-	-	-	-
त	ब	शु	भ	आ	-	शि	श	मां	-	गे	-	-	-	-	-
ग	म	प	प	प	-	म	ग	रे	म	ग	-	-	-	-	-
गा	-	हे	-	त	व	ज	य	गा	-	था	-	-	-	-	-
ग	-	ग	-	रे	रे	रे	रे	ऩी	रे	सा	-	-	-	-	-

ज	न	ग	ण	म	न	अ	धि	ना	ऽ	य	क	ज	य	हे	ऽ,
प	प	प	प	प	-	प	प	प	-	प	प	म॑	ध	प	-
भा	-	र	त	भा	ऽ	ग्य	वि	धा	-	ता	ऽ	ऽ	ऽ	पं	ऽ
म	-	म	म	म	-	म	ग	रे	म	ग	-	-	-	नी	नी
ज	य	हे	-	-	-	ज	य	हे	-	-	-	-	-	ज	य
सां	-	-	-	-	-	नी	ध	नी	-	-	-	-	-	प	प
हे	-	-	-	-	-	-	-	ज	य	ज	य	ज	य	ज	य
ध	-	-	-	-	-	-	-	सा	सा	रे	रे	ग	ग	रे	ग
हे	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
म	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

3.1 प्रस्तुत गीत किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

3.2 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

क) 6

ख) 7

ग) 8

घ) 10

3.3 प्रस्तुत गीत जन गण मन कब लिखा गया था।

क) 1924

ख) 1911

ग) 1921

घ) 1946

3.4 जन गण मन गीत को किसने लिखा है।

क) रवीन्द्रनाथ टैगोर

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) सुमित्रानंदन पंत

3.3.2 देशभक्ति गीत 2 - आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान

इस गीत में भारत के लोगों को भारत के भविष्य की कल्पना को बताया गया है। जहां अमीरी गरीबी अत्याचार नहीं होते, सबको रोजगार मिलता है और हर तरफ खुशी होती है। जात-पात भेदभाव नहीं होता और सारे संसार में भारत की शान बढ़ती है।

आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान

गांधी नेहरू के सपनों का प्यारा हिंदुस्तान

प्यारा हिंदुस्तान प्यारा हिंदुस्तान

जहां गरीबी लाचारी ना होगा अत्याचार

हर इंसान को काम मिले और कोई ना हो बेकार

स्वर्ग से भी सुंदर होगा ये अपना हिंदुस्तान

जहां देश की खातिरहर एक करने को तैयार

घर घर में खुशहाली हो जहां हर दिल में हो प्यार

जिसके आगे झुक जाए ये धरती आसमान

जात-पात और भेदभाव का कहीं ना हो अवनाम

हर जाति हर भाषा हर मजहब का हो सम्मान

सारे जहां में सबसे ऊंची होगी जिसकी शान

लय: मध्य **ताल: कहरवा**

x 1	2	3	4	0 5	6	7	8
स्थायी							
सा	सा	पम	प	सा	प	म	प
आ	ओ	बना	एं	मिल	कर	अप	ना
ग॒	ग॒	रे	ऩी॒	सा	-	सा	-
प्या	रा	हिन्	दोस्	ता	-	न	-
म	-	म	-	म	मम	म	म
गां	धी	नेह	रू	के	सप	नों	का

ग	ग	ध	ध	प	प	पप	प
प्या	रा	हिन्	दोस्	ता	-	न	-
ग	ग	रे	नी	सा	-	सा	-
प्या	रा	हिन्	दोस्	ता	-	न	-

अंतरा

पप	प	नी	सां	प	-	नी	सां
जहां	ग	री	बी	ला	चा	री	न
प	प	रें	रें	सां	-	सां	-
हो	गा	अ	त्या	चा	-	र	-
नीनी	नीनी	ध	प	ध	ध	प	म
हर	इं	सां	को	काम	मि	ले	और
मप	म	ग	म	प	-	प	-
कोई	ना	हो	बे	का	-	र	-
गम	म	ग	रे	सा	-	सा	-
कोई	ना	हो	बे	का	-	र	-

सा	सा	पम	प	सा	प	म	प
स्व	र्ग	सेभी	सुं	दर	हो	गा	ये
ग	ग	रे	नी	सा	-	सा	-
अप	ना	हिं	दोस्	ता	-	न	

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 2

3.5 प्रस्तुत गीत किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

3.6 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

क) 6

ख) 7

ग) 8

घ) 10

3.7 इस गीत में गंधार स्वर कैसा लगता है।

क) शुद्ध

ख) कोमल

3.8 इस गीत में निषाद स्वर कैसा लगता है।

क) कोमल

ख) शुद्ध

ग) तीव्र

3.4 सारांश

राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीत विशेष भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। यह गीत अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध किए गए। प्रस्तुत गीतों में भारत वर्षकी सुंदरता समृद्धि, एकता, अखंडता, आदि का सुंदरता पूर्वक वर्णन किया गया है। साथ ही यह भी कामना की गई है कि देश जात-पात, भेद भाव से दूर होकर एक विकसित तथा समृद्ध देश बने और हम सब इसे विकसित करने में, सुंदर बनाने में, अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

3.5 शब्दावली

- कहरवा: कहरवा आठ मात्रा की एक ताल है जो मुख्य रूप से तबला वाद्य पर बजाई जाती है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- मध्य लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय ना तो धीमी हो ना बहुत तेज गति में चले तो उसे मध्य लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 उत्तर: घ)

3.2 उत्तर: ग)

3.3 उत्तर: ख)

3.4 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 2

3.5 उत्तर: घ)

3.6 उत्तर: ग)

3.7 उत्तर: ख)

3.8 उत्तर: क)

3.7 संदर्भ

https://parenting.firstcry.com/articles/10-most-popular-indian-patriotic-songs-for-children-with-lyrics/

शर्मा, डॉ. लोकेश. (2012). मधुर गीतांजली. कनिष्क पब्लिशर्ज, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

3.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. लोकेश. (2012). मधुर गीतांजली. कनिष्क पब्लिशर्ज, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक देशभक्ति गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 2. किसी एक देशभक्ति गीत की स्वरलिपि को लिखिए।

प्रश्न 3. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की स्वरलिपि को लिखिए।

इकाई 4
पावर प्वाइंट प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य तथा परिणाम
4.3	पावर प्वाइंट प्रस्तुति: आवश्यकता, महत्व, उद्देश्य
4.3.1	पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों की आवश्यकता
4.3.2	सांगीतिक विषयों में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों का महत्व
4.3.3	सांगीतिक विषयों में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के उद्देश्य
4.3.4	स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4	पावर प्वाइंट प्रस्तुति: घटक, नियम और विधियाँ, शर्तें, चरण, लाभ और सीमाएँ
4.4.1	पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के घटक
4.4.2	सांगीतिक विषयों के प्रस्तुतिकरण में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के नियम तथा विधियाँ
4.4.3	पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों को तैयार करने के लिए शर्तें
4.4.4	पावर प्वाइंट प्रस्तुति (Power Point Presentation) के चरण
4.4.5	पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के लाभ
4.4.6	पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों की सीमाएँ
	स्वयं जांच अभ्यास 2
4.5	सारांश
4.6	शब्दावली
4.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.8	संदर्भ
4.9	अनुशंसित पठन
4.10	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में पावर प्वाइंट प्रस्तुति (Power Point Presentation) को कैसे बनाते हैं यह प्रस्तुत किया गया है। पावर प्वाइंट प्रस्तुति सॉफ़्टवेयर एक महत्वपूर्ण और प्रभावी साधन है जो विभिन्न संदर्भों में जानकारी और विचारों को सुव्यवस्थित और प्रस्तुत करने में मदद करता है। इसका उपयोग व्याख्यान, व्यावसायिक प्रस्तुतियाँ, शिक्षण, और अन्य संवादात्मक संदर्भों में किया जाता है जहां समग्र विचारों को ग्राहकों या श्रोताओं तक पहुँचाना आवश्यक होता है। यह साधन छवियों, ग्राफ़िक्स, और अन्य माध्यमों का प्रयोग करके सामग्री को समझाने में मदद करता है और सुनिश्चित करता है कि ज्ञान सही और प्रभावी ढंग से साझा हो। पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ अपनी अंतर्निहित संरचना के लिए प्रसिद्ध हैं जिसमें प्रत्येक स्लाइड में विशेष बिंदुओं को स्पष्ट किया जाता है, जैसे कि अनुक्रमणिका, प्रस्तावना, मुख्य संदेश, विश्लेषण, और निष्कर्ष। इसके अलावा, इसे ऑटोमेशन संदर्भ में भी उपयोग किया जा सकता है ताकि प्रस्तुतियाँ स्वचालित रूप से प्रगति कर सकें। इसकी विशेषता यह है कि यह व्यक्तिगत और पेशेवर उद्देश्यों के लिए बनाया गया है और विशेष रूप से व्यावसायिक संदर्भों में उपयुक्त है। समर्थन और गहराई से विचार करते हुए, पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ एक महत्वपूर्ण उपकरण हैं जो समृद्ध और प्रभावी संवाद स्थापित करने में मदद करते हैं। इसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में जानकारी को सुनिश्चित करने के लिए एक अवश्यक साधन है जो विचारों को समझाने और याद रखने में सहायक होता है।

पावर प्वाइंट प्रस्तुति एक अत्यधिक प्रभावी और व्यावसायिक साधन है जो विभिन्न संदर्भों में जानकारी और विचारों को सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने में मदद करता है। यह डिजिटल प्रस्तुति ग्राफ़िक्स और प्रस्तुति तकनीकों के माध्यम से विभिन्न सामग्रियों को आकर्षक बनाता है और दर्शकों तक पहुँचाता है। इसका उपयोग शिक्षा और व्यावसायिक संदर्भों में जानकारी को समझाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जहां विचारों को स्पष्टता से और आकर्षकता से प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति या समूह अपने संदेश को साझा करते हैं और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को पावर प्वाइंट प्रस्तुति, आवश्यकता, महत्व, उद्देश्य की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को पावर प्वाइंट प्रस्तुति, घटक, नियम और विधियाँ, शर्तें, चरण, लाभ और सीमाएँ की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को संगीत के विभिन्न विषयों पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति बनाने की तकनीक बताना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, पावर प्वाइंट प्रस्तुति, आवश्यकता, महत्व, उद्देश्य की मूलभूत तकनीक के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, पावर प्वाइंट प्रस्तुति, घटक, नियम और विधियाँ, शर्तें, चरण, लाभ और सीमाएँ की के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, संगीत के विभिन्न विषयों पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति बना सकेगा तथा उनकी प्रस्तुति कर पाएगा।

4.3 पावर प्वाइंट प्रस्तुति की आवश्यकता, महत्व तथा उद्देश्य

4.3.1 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों की आवश्यकता

पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों की आवश्यकता का विवरण निम्नलिखित है:

- **विश्वसनीयता और प्रभाव**: सांगीतिक विषयों के प्रस्तुतिकरण में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ जानकारी को विश्वसनीय और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करती हैं। विभिन्न ग्राफिक्स, चित्र और पाठ से युक्त प्रस्तुतियाँ दर्शकों के मन में स्थायी असर छोड़ती हैं।

- **संदर्भों की स्पष्टता**: बड़े विषयों को स्पष्ट करने के लिए पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों का उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। यह विषय के संदर्भ में सही दिशा में ले जाती हैं और विषय समझने में सहायता प्रदान करती हैं।
- **समय की बचत**: सांगीतिक विषयों के प्रस्तुतिकरण में समय की कमी होती है, इसलिए पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ बड़ी जानकारी को संक्षेप में प्रस्तुत करने में मदद करती हैं। ये ज्ञान साझा करने के लिए अत्यंत उपयुक्त होती हैं।
- **व्याख्यान की सहायता**: वक्ता को अपने विचारों को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ बड़ी सहायता प्रदान करती हैं। वे अपनी बात को व्यक्त करने के लिए चित्रों, आवाजों आदि का उपयोग कर समर्थन प्रदान कर सकते हैं।

4.3.2 सांगीतिक विषयों में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों का महत्व

सांगीतिक विषयों में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों का महत्व निम्नलिखित है:

- **विश्वसनीयता बढ़ाना**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ विश्वसनीयता बढ़ाती हैं और दर्शकों को विषय में आसानी से विश्वास करने में मदद करती हैं। विभिन्न ग्राफिक्स, छवियाँ और पाठ से युक्त प्रस्तुतियाँ विषय को समझाने में सहायक होती हैं।
- **संवादात्मक संवेदनशीलता**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ संवादात्मक संवेदनशीलता को बढ़ाती हैं और दर्शकों के बीच विचारों को आलोचना करने का माध्यम प्रदान करती हैं। इससे समझौता और समर्थन के लिए एक संवेदनशील माहौल बनता है।
- **समय की बचत**: समय की मांग में समझाने के लिए बड़ी जानकारी को संक्षेप में प्रस्तुत करने में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ महत्वपूर्ण योगदान करती हैं।

- **दर्शकों का ध्यान**: बात को ग्राफिक्स और छवियों के माध्यम से समर्थन करने से पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ दर्शकों का ध्यान बनाए रखने में सहायक होती हैं। यह उन्हें विषय को समझने में मदद करती हैं और स्थायी असर छोड़ती हैं।
- **विभिन्नता और गहराई**: विभिन्न विषयों को गहराई से समझाने के लिए पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं। इसके माध्यम से विभिन्न पहलुओं को दिखाने का माध्यम मिलता है और विषय के अलग-अलग पहलुओं को उजागर किया जा सकता है।

4.3.3 सांगीतिक विषयों में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के उद्देश्य

सांगीतिक विषयों के प्रस्तुतिकरण में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के उद्देश्यों का विवरण निम्नलिखित है:

- **ज्ञान साझा करना**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ ज्ञान को साझा करने का माध्यम होती हैं। इन्हें विषय के अलग-अलग पहलुओं को दिखाने और समझाने के लिए उपयोग किया जा सकता है।
- **समय की बचत**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ समय की बचत करने में मदद करती हैं। वे बड़ी जानकारी को संक्षेप में प्रस्तुत करने में सहायक होती हैं और विषय के मुख्य पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करती हैं।
- **समझौता और सहायता**: विभिन्न विचारों और प्रतिष्ठानों के बीच समझौता करने के लिए पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ एक अच्छा माध्यम प्रदान करती हैं। वे विषय को गहराई से समझाने में मदद कर सकती हैं और विचारों को सही दिशा में ले जा सकती हैं।
- **संवादात्मक वातावरण संचालित करना**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ संगोष्ठी में संवादात्मक वातावरण संचालित करने में मदद कर सकती हैं। वे दर्शकों के बीच विचारों और विचारों को समझाने के लिए उदाहरण और ग्राफिक्स का उपयोग कर सहायक हो सकती हैं।

- **स्पष्टता और यादगारता बढ़ाना**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ संगोष्ठी के विषय को स्पष्ट और यादगार बनाने में मदद कर सकती हैं। वे उपयुक्त छवियों, ग्राफिक्स और पाठ का उपयोग कर दर्शकों के बीच विषय को समझाने में सहायक हो सकती हैं।

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 पावर प्वाइंट प्रस्तुति क्या है और इसका उपयोग क्यों किया जाता है?

4.2 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों की सांगीतिक विषयों के प्रस्तुतिकरण में क्या आवश्यकता है?

4.3 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों से समय की बचत कैसे होती है?

4.4 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ कैसे विश्वसनीयता और प्रभाव बढ़ाती हैं?

4.5 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ कैसे संवादात्मक संवेदनशीलता बढ़ाती हैं?

4.6 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ व्याख्यान में वक्ता की कैसे मदद करती हैं?

4.7 सांगीतिक विषयों के प्रस्तुतिकरण में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों का उद्देश्य क्या होता है?

4.8 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ कैसे अध्ययन और संवादात्मक संदर्भों में मदद करती हैं?

4.9 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ कैसे दर्शकों का ध्यान बनाए रखने में सहायक होती हैं?

4.10 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों का उपयोग कौन-कौन से क्षेत्रों में होता है?

4.4 पावर प्वाइंट प्रस्तुति: घटक, नियम और विधियाँ, शर्तें, चरण, लाभ और सीमाएँ

4.4.1 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के घटक

पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के मुख्य घटक जो सांगीतिक विषयों के प्रस्तुतिकरण में उपयोग किए जा सकते हैं, वे निम्नलिखित हैं:

- **स्लाइड्स (Slides)**: प्रत्येक पावर प्वाइंट प्रस्तुति में स्लाइड्स होते हैं जिन्हें एक से अधिक विषय पर बनाया जाता है। हर स्लाइड पर विभिन्न छवियाँ, ग्राफिक्स, और पाठ होता है जो विषय को समझाने में मदद करते हैं।
- **पाठ (Text)**: प्रत्येक स्लाइड पर पाठ होता है जो विषय को स्पष्ट करता है और व्याख्याता या प्रस्तावक द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले मुख्य बिंदुओं को बयान करता है।
- **छवियाँ और ग्राफिक्स (Images and Graphics)**: छवियाँ और ग्राफिक्स उचित स्थल पर जोड़े जाते हैं ताकि दर्शकों को विषय को समझाने में मदद मिल सके। इन्हें प्रस्तुत किया गया डेटा या आँकड़े स्पष्ट करने के लिए भी उपयोग किया जा सकता है।
- **ग्राफ (Charts)**: ग्राफ और तालिकाओं का उपयोग विषय के अंदर तथ्यों और आंकड़ों को समझाने के लिए किया जाता है। ये संख्यात्मक डेटा को ग्राफिकल रूप में प्रस्तुत करते हैं जो दर्शकों को विषय के बारे में स्पष्टता प्रदान करते हैं।
- **ऑडियो और वीडियो (Audio and Video)**: अधिकांश पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों में ऑडियो और वीडियो शामिल किए जा सकते हैं जो विषय को गहराई से समझाने में मदद करते हैं और दर्शकों का ध्यान बनाए रखते हैं।
- **अनुसंधान और स्रोत (References and Sources)**: प्रस्तुति में उपयुक्त अनुसंधान और स्रोतों का उल्लेख करना भी महत्वपूर्ण होता है ताकि विषय पर स्पष्टता और विश्वसनीयता बनी रहे।
- **स्लाइड शो का ढंग (Slide Show Format)**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ एक स्लाइड शो के रूप में संचालित होती हैं जिसमें विभिन्न स्लाइड्स को अनुक्रमित और संचालित किया जाता है ताकि विषय का संक्षेप में विश्लेषण किया जा सके।
- **प्रस्तावना और समापन (Introduction and Conclusion)**: प्रस्तावना और समापन स्लाइड्स विषय को समझाने में मदद करते हैं और दर्शकों को प्रस्तुति के मुख्य उद्देश्य को समझाने में सहायक होते हैं।

- **अभिव्यक्ति और संवेदना (Expression and Emotion)**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों में अभिव्यक्ति और भावना को उचित ढंग से प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न स्लाइड्स का उपयोग किया जाता है। यह विषय के अनुभव और महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाने में मदद कर सकता है।

4.4.2 सांगीतिक विषयों के प्रस्तुतिकरण में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के नियम तथा विधियाँ

सांगीतिक विषयों के प्रस्तुतिकरण में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के नियम तथा विधियाँनिम्नलिखित होती हैं:

- **स्लाइड की संख्या**: प्रस्तुति में स्लाइड्स की संख्या को समय सीमा के अनुसार निर्धारित करें। ज्यादा स्लाइड्स का उपयोग न करें ताकि समय पर रहा जा सके और दर्शकों का ध्यान बना रहे।
- **छवियों और ग्राफिक्स का उपयोग**: गुणवत्तापूर्ण और संगठित छवियों और ग्राफिक्स का उपयोग करें जो विषय को स्पष्ट और समझाने में मदद करें।
- **पाठ का उपयोग**: स्लाइड्स पर पाठ को सरल और स्पष्ट बनाएं, अध्ययन के लिए अधिकतम सुविधा प्रदान करें।
- **फॉन्ट और रंग का चयन**: स्लाइड्स में फॉन्ट (Font) और रंग का उचित चयन करें जो स्पष्टता बढ़ाए और दर्शकों के ध्यान को आकर्षित करे।
- **संक्षेप करें**: प्रस्तुति में समय सीमा के अनुसार विषय को संक्षेपित रखें और मुख्य बिंदुओं पर ही ध्यान केंद्रित करें।
- **विवरण और अभिव्यक्ति**: हर स्लाइड पर विवरण और अभिव्यक्ति को संवेदनशीलता से प्रस्तुत करें ताकि दर्शकों का साथ रहे।
- **अंतराल और संचालन**: स्लाइड्स के बीच उचित अंतराल दें और प्रस्तुति का संचालन सुगम बनाए रखें।

- **संवादिता और संवादात्मक वातावरण**: दर्शकों के साथ संवादिता बनाए रखने के लिए स्लाइड्स का उपयोग करें और संवादात्मक वातावरण स्थापित करें।
- **स्वास्थ्यिक सुरक्षा**: जब प्रस्तुतियाँ व्यक्तिगत रूप से देखी जाएं, तो स्वास्थ्यिक सुरक्षा का ध्यान रखें और संवादिता का उचित ढंग से समर्थन करें।
- **समीक्षा और संशोधन**: प्रस्तुति को प्राथमिक रूप से समीक्षा करें और उचित संशोधन करने का समय दें ताकि विषय को सटीकता से प्रस्तुत किया जा सके।

4.4.3 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों को तैयार करने के लिए शर्तें

पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों को तैयार करने के लिए निम्नलिखित शर्तें महत्वपूर्ण होती हैं:

- **विषय चयन**: प्रस्तुति का विषय समय सीमा और दर्शकों के हित में चुना जाना चाहिए। विषय का चयन ऐसा होना चाहिए जो सुगमता से समझा जा सके और जिस पर आपके पास विशेष ज्ञान हो।
- **संरचना और व्यवस्था**: प्रस्तुति का संरचना स्पष्ट होना चाहिए और स्लाइड्स को एक सुव्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। हर स्लाइड पर संक्षेप में जानकारी देनी चाहिए ताकि दर्शकों को विषय का सार मिल सके।
- **छवियाँ और ग्राफिक्स**: गुणवत्तापूर्ण और संगठित छवियों और ग्राफिक्स का उपयोग करें जो विषय को स्पष्टता से समझाएं। वे विषय को आंतरिकता और दर्शकों के बीच संवाद को सुदृढ़ कर सकते हैं।
- **पाठ का चयन**: स्लाइड्स पर पाठ को सरल और सुसंगत बनाएं। वाच्यार्थी अध्ययन के लिए उपयुक्त पाठ का चयन करें ताकि दर्शकों को विषय का अच्छी तरह से समझाया जा सके।
- **अंतराल और समय व्यवस्था**: हर स्लाइड के बीच उचित अंतराल दें और प्रस्तुति का समय सीमा में रहने का पालन करें। यह सुनिश्चित करेगा कि विषय सम्पूर्ण हो और दर्शकों का ध्यान बना रहे।

- **संवेदनशीलता और भावना**: प्रस्तुति में संवेदनशीलता और भावना को सही ढंग से प्रस्तुत करें ताकि दर्शकों का ध्यान बना रहे और विषय का सार उन्हें समझ में आ सके।
- **भाषा और स्वर**: प्रस्तुति में स्पष्ट, सुसंगत और उच्च स्वर और भाषा का उपयोग करें। यह सुनिश्चित करेगा कि सभी दर्शकों को समझने में कोई कठिनाई नहीं हो।
- **समीक्षा और संशोधन**: प्रस्तुति को प्राथमिक रूप से समीक्षा करें और उचित संशोधन करें ताकि विषय को सटीकता से प्रस्तुत किया जा सके।
- **पावर प्वाइंट सॉफ़्टवेयर का ज्ञान**: प्रस्तुति तैयार करते समय पावर प्वाइंट सॉफ़्टवेयर के स्थापना और उपयोग का अच्छा ज्ञान रखें। इससे आप अपनी प्रस्तुति को आकर्षक और अच्छी तरह से संचालित कर सकेंगे।
- **सामर्थ्य और आत्म-विश्वास**: आत्म-विश्वास बनाए रखें और प्रस्तुति के दौरान अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करें। यह आपकी प्रस्तुति को मजबूती और प्रभावशाली बनाएगा।

4.4.4 पावर प्वाइंट प्रस्तुति (PowerPoint Presentation) के चरण

पावर प्वाइंट प्रस्तुति (PowerPoint Presentation) को तैयार करने की प्रक्रिया में निम्नलिखित चरण होते हैं:

- **विषय का चयन**: प्रस्तुति के लिए पहले विषय का चयन करें। यह विषय संगीत संबंधी निर्धारित हो सकता है।
- **सामग्री की संग्रहीत करना**: विषय के आधार पर आवश्यक सामग्री जैसे कि तथ्य, आंकड़े, चित्र, छवियाँ, वीडियो आदि को संग्रहित करें।
- **प्रस्तुति का ढांचा निर्धारित करें**: प्रस्तुति के लिए ढांचा निर्धारित करें, जैसे कि स्लाइड्स की संख्या, प्रत्येक स्लाइड में क्या सामग्री होनी चाहिए, और उनके क्रम में व्यवस्था।

- **प्रारंभिक बोर्ड बनाएं**: एक प्रारंभिक बोर्ड बनाएं जिसमें प्रस्तुति के मुख्य विषयों और स्लाइड्स की सारांशिक जानकारी हो।
- **स्लाइड्स तैयार करें**: प्रत्येक स्लाइड को तैयार करने के लिए सामग्री को अनुकूलित करें। हर स्लाइड में अपने विषय को स्पष्ट और संगठित ढंग से प्रस्तुत करें।
- **शीर्षक और उपशीर्षक जोड़ें**: प्रत्येक स्लाइड के लिए उपयुक्त शीर्षक और उपशीर्षक जोड़ें, जो सभी को समझने में मदद करें।
- **ग्राफिक्स और छवियाँ जोड़ें**: ग्राफिक्स, छवियाँ, चार्ट्स, या अन्य विजुअल उपकरण जोड़ें जो विषय को समझाने में मदद करें।
- **वीडियो और ऑडियो शामिल करें**: यदि आवश्यक हो, तो वीडियो और ऑडियो भी प्रस्तुतीकरण में शामिल करें। यह विषय को समझाने और सभी का ध्यान बनाए रखने में मदद करता है।
- **चयनित ढांचे में संशोधन**: सभी स्लाइड्स को देखें और उन्हें चयनित ढांचे में संशोधित करें, ताकि प्रस्तुति का ढांचा सुसंगत और स्पष्ट हो।
- **प्रस्तुति की अंतिम समीक्षा**: प्रस्तुति की अंतिम समीक्षा करें और सुनिश्चित करें कि सभी सामग्री समय सीमा के भीतर और विषय के अनुसार सही है।
- **तकनीकी जांच**: अंतिम तकनीकी जांच करें, ताकि प्रदर्शन के दौरान कोई तकनीकी समस्या न हो।
- **प्रस्तुति की शुरुआत**: अंत में, प्रस्तुति की शुरुआत करें और दर्शकों के साथ अपने विचारों को साझा करें।

4.4.5 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के लाभ

पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों को तैयार करने के कई लाभ होते हैं, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- **स्पष्टता का साधन**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ विषय को स्पष्ट और सरल ढंग से समझाने में मदद करती हैं। वे विषय को संवेदनशीलता से प्रस्तुत करके दर्शकों के बीच संवाद को बढ़ाती हैं।

- **दिखावटी आकर्षण**: ग्राफिक्स, छवियाँ और वीडियो के माध्यम से पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ विषय को और भी दिखावटी और आकर्षक बनाती हैं। इससे दर्शकों का ध्यान बना रहता है और प्रस्तुति में रुचि बढ़ती है।
- **समय की बचत**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ समय की बचत करने में मदद करती हैं। वे स्लाइड्स के माध्यम से विषय को तेजी से प्रस्तुत करती हैं और समय सीमा में रहने में सहायक होती हैं।
- **स्पष्टता और संगठन**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ स्पष्टता और संगठन का साधन करती हैं। वे विषय को विभिन्न स्लाइड्स में व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करती हैं और दर्शकों को विषय का पूरा दृश्य प्राप्त होता है।
- **व्यावसायिक दृष्टिकोण**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ व्यावसायिक दृष्टिकोण दिखाती हैं और आपकी पेशेवर पहचान को मजबूत करती हैं। वे आपके विचारों और अनुसंधान को व्यक्त करने में मदद करती हैं।
- **सहयोगी शिक्षा का माध्यम**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ शिक्षा के अच्छे साधन होती हैं और विषय को गहराई से समझाने में मदद करती हैं। वे छात्रों को विषय को आसानी से समझने में सहायक होती हैं।
- **अध्ययन के लिए सुविधा**: प्रस्तुतियाँ अध्ययन करने के लिए सुविधाजनक होती हैं और विषय को समझने में छात्रों को मदद करती हैं। छात्रों को विभिन्न पहलुओं पर विचार करने में आसानी प्राप्त होती है।
- **प्रभावी संवाद**: एक अच्छी पावर प्वाइंट प्रस्तुति द्वारा आपका संवाद बेहतर बनता है और आपके विचारों को अधिक प्रभावशाली बनाता है।
- **अनुभव और स्वाध्याय**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ आपको अनुभव और स्वाध्याय में मदद करती हैं और आपके विचारों को आगे बढ़ाने में साहायक होती हैं। वे आपके सोचने के तरीके को प्रकाश में लाती हैं और आपके लिए नई दिशा स्थापित करती हैं।

4.4.6 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों की सीमाएँ

पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों को तैयार करने के कुछ सीमाएँ भी होती हैं, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- **समय सीमा**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ बड़े समय की अवधि में तैयार करने में कठिनाई हो सकती है। यहाँ तक कि अधिकतर अवसरों में समय सीमा तय होती है और प्रस्तुति को उसी के भीतर संक्षेप में प्रस्तुत करना पड़ सकता है।
- **तकनीकी समस्याएँ**: यदि प्रस्तुति के दौरान कंप्यूटर या प्रोजेक्टर में कोई तकनीकी समस्या आ जाए, तो इससे प्रस्तुति प्रभावित हो सकती है। इसलिए, प्रदर्शन की तैयारी में तकनीकी तत्परता रखना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।
- **संवाद की गुणवत्ता**: कई बार प्रस्तुति के दौरान अधिक ध्यान केंद्रित या गहरे संवाद की आवश्यकता होती है, जिसे पावर प्वाइंट स्लाइड्स के माध्यम से पूरी तरह से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।
- **सामग्री की सीमाएँ**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ सीमित सामग्री के माध्यम से ही प्रस्तुत की जा सकती हैं। कुछ विषय इसमें विस्तारपूर्वक समझाने में कठिनाई हो सकती है।
- **समय प्रबंधन**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों की तैयारी और संवाद के लिए अच्छा समय प्रबंधन अत्यंत आवश्यक होता है। अगर समय प्रबंधन ठीक से नहीं किया गया तो प्रस्तुति प्रभावशाली नहीं हो पाती।
- **दर्शकों की ध्यान अवरुद्धता**: यदि प्रस्तुति में अधिक छवियाँ और ग्राफिक्स हों, तो दर्शकों का ध्यान विषय से हट सकता है और वे समय सीमा में न रहकर अन्य कार्यों में लग जा सकते हैं।
- **संवाद में कमी**: कई बार पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के दौरान संवाद में व्यक्तिगत संपर्क की कमी महसूस हो सकती है, जो संवाद को सुसंगत और समर्थनयोग्य बनाता है।
- **तकनीकी अनुभव की आवश्यकता**: पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के लिए तकनीकी अनुभव और उपकरणों की आवश्यकता होती है। यह प्रस्तुति के प्रभाव को प्रभावित कर सकता है।

स्वयं जांच अभ्यास 2

4.11 संगोष्ठी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों का क्या महत्व है?

4.12 पावर प्वाइंट प्रस्तुति के मुख्य घटक कौन-कौन से हैं?

4.13 संगोष्ठी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के उपयोग के क्या लाभ हैं?

4.14 सांगीतिक विषयों में, पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों की तैयारी के लिए कौन-कौन सी विधियाँ होती हैं?

4.15 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों की सीमाएँ क्या होती हैं?

4.16 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों में स्लाइड्स का क्या महत्व है?

4.17 पावर प्वाइंट प्रस्तुति में ग्राफिक्स और छवियाँ क्यों आवश्यक हैं?

4.18 पावर प्वाइंट प्रस्तुति में ऑडियो और वीडियो का क्या योगदान है?

4.19 पावर प्वाइंट प्रस्तुति के दौरान समय प्रबंधन क्यों महत्वपूर्ण है?

4.20 संगोष्ठी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों के लिए क्या आवश्यक शर्तें होती हैं?

4.5 सारांश

पावर प्वाइंट प्रस्तुति एक शक्तिशाली साधन है जो जानकारी, डेटा, और विचारों को विभिन्न सामाजिक, व्यापारिक, और शिक्षात्मक संदर्भों में आकर्षक और सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करता है। यह डिजिटल साधन विशेषकर विजुअल प्रस्तुतियों के माध्यम से समझाने और संवादात्मक रूप से जोड़ने में मदद करता है। प्रस्तुतियों में विभिन्न स्लाइड्स और पृष्ठों में व्यवस्थित सामग्री शामिल होती है, जिनमें चित्र, ग्राफ़िक्स, टेक्स्ट, वीडियो, और ऑडियो शामिल हो सकते हैं। यह साधन विभिन्न उद्देश्यों के लिए उपयुक्त होता है, जैसे कि व्याख्यान, प्रशिक्षण, औद्योगिक प्रस्तुतियाँ, और समारोह। इन प्रस्तुतियों के माध्यम से ज्ञान को अपनाए जाने में आसानी होती है और विचारों को स्पष्टता से साझा करने में मदद मिलती है। इससे सामाजिक, व्यावसायिक, और शैक्षिक क्षेत्रों में ज्ञान का प्रसार होता है और नई विचारशीलता को प्रोत्साहित किया जाता है।

- **ग्राफ़िक्स (Graphics)**: स्लाइड पर चार्ट्स, ग्राफ़, या अन्य चित्र जो डेटा या तथ्यों को ग्राफ़िकल रूप में प्रस्तुत करने में मदद करते हैं।
- **छवि (Image)**: स्लाइड पर उपयुक्त ग्राफ़िकल आवरण जो जानकारी को समझाने और सुविधाजनक बनाने में मदद करती है।
- **टेक्स्ट (Text)**: स्लाइड पर प्रस्तुत जानकारी या मुख्य बिंदु को लिखित रूप में प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त पाठ।
- **प्रस्तुति (Presentation)**: जब कोई व्यक्ति या समूह अपने विचारों, जानकारी या अनुसंधान को सामर्थ्यपूर्ण रूप से स्लाइड्स के माध्यम से दूसरों के सामने प्रस्तुत करता है।
- **स्लाइड (Slide)**: पावर प्वाइंट प्रस्तुति का मुख्य भाग जिसमें विचार, जानकारी या डेटा को ग्राफ़िक्स, पाठ, और अन्य साधनों के साथ साजा जाता है।

4.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.1 पावर प्वाइंट प्रस्तुति एक सॉफ़्टवेयर है जो जानकारी, डेटा, और विचारों को आकर्षक और सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने में मदद करता है। इसका उपयोग विभिन्न सामाजिक, व्यापारिक, और शिक्षात्मक संदर्भों में किया जाता है ताकि विषय को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से समझाया जा सके।

4.2 संगोष्ठी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ विश्वसनीयता, संदर्भों की स्पष्टता, समय की बचत, अध्ययन और संवादात्मक संदर्भ, और व्याख्यान की सहायता के लिए महत्वपूर्ण होती हैं। ये प्रस्तुतियाँ जानकारी को प्रभावी और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करती हैं।

4.3 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ बड़ी जानकारी को संक्षेप में प्रस्तुत करने में मदद करती हैं, जिससे सांगीतिक विषयों के प्रस्तुतिकरण में समय की कमी के बावजूद जानकारी को प्रभावी रूप से साझा किया जा सकता है।

4.4 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ ग्राफिक्स, छवियाँ, और पाठ के माध्यम से जानकारी को विश्वसनीय और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती हैं, जिससे दर्शकों के मन में स्थायी असर पड़ता है और वे विषय पर विश्वास कर पाते हैं।

4.5 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ संवादात्मक संवेदनशीलता को बढ़ाती हैं और दर्शकों के बीच विचारों को आलोचना करने का माध्यम प्रदान करती हैं, जिससे एक संवेदनशील माहौल बनता है और समझौता और समर्थन के लिए एक मंच मिलता है।

4.6 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ वक्ता को अपने विचारों को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करती हैं। वे चयनित छवियों और ग्राफिक्स का उपयोग करके अपने बिंदुओं का समर्थन कर सकते हैं।

4.7 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों का उद्देश्य ज्ञान साझा करना, समय की बचत, समझौता और सहायता, संवादात्मक वातावरण संचालित करना, स्पष्टता और यादगारता बढ़ाना, और प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण प्रदर्शित करना होता है।

4.8 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ विभिन्न विचारों और प्रतिष्ठानों के बीच तात्कालिक विचारों को समझाने में मदद करती हैं और अध्ययन और संवादात्मक संदर्भों में विषय को गहराई से समझाने में योगदान करती हैं।

4.9 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ ग्राफिक्स और छवियों के माध्यम से समर्थन प्रदान करती हैं, जिससे दर्शकों का ध्यान विषय पर केंद्रित रहता है और वे इसे समझने और याद रखने में सक्षम होते हैं।

4.10 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों का उपयोग व्याख्यान, प्रशिक्षण, उद्घाटन समारोह, विशेष सम्मेलन, बिजनेस प्रस्तुतियाँ आदि अवसरों में होता है। ये विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञता और विचारों को साझा करने में मदद करती हैं।

4.11 संगोष्ठी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ विषय को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करती हैं। यह दर्शकों के मन में स्थायी असर छोड़ती हैं, बड़े और जटिल विषयों को स्पष्ट करती हैं, समय की बचत करती हैं, और अध्ययन एवं संवादात्मक साधन के रूप में कार्य करती हैं।

4.12 पावर प्वाइंट प्रस्तुति के मुख्य घटक स्लाइड्स, पाठ, छवियाँ और ग्राफिक्स, ग्राफ, ऑडियो और वीडियो, अनुसंधान और स्रोत, स्लाइड शो का ढंग, प्रस्तावना और समापन, अभिव्यक्ति और संवेदना, समीक्षा और प्रतिक्रिया होते हैं।

4.13 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियाँ विषय को स्पष्टता से समझाने, दिखावटी आकर्षण बढ़ाने, समय की बचत करने, स्पष्टता और संगठन का साधन करने, व्यावसायिक दृष्टिकोण दिखाने, स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय पहुँच बढ़ाने, सहयोगी शिक्षा का माध्यम बनने, अध्ययन के लिए सुविधा प्रदान करने, प्रभावी संवाद स्थापित करने, और अनुभव और स्वाध्याय में मदद करने में सहायक होती हैं।

4.14 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों की तैयारी के लिए स्लाइड की संख्या का निर्धारण, छवियों और ग्राफिक्स का उपयोग, पाठ का चयन, फॉन्ट और रंग का चयन, संक्षेप में जानकारी देना, विवरण और अभिव्यक्ति, स्लाइड्स के बीच अंतराल देना, संवादिता और संवादात्मक वातावरण बनाए रखना, स्वास्थ्यिक सुरक्षा का ध्यान रखना, और समीक्षा एवं संशोधन करना शामिल होता है।

4.15 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों की संगोष्ठी में सीमाएँ होती हैं जैसे समय सीमा का पालन करना, तकनीकी समस्याओं का सामना करना, संवाद की गुणवत्ता में कमी, सामग्री की सीमाएँ, अंतर्दृष्टि की कमी, समय प्रबंधन की आवश्यकता, दर्शकों का ध्यान अवरुद्ध करना, संवाद में कमी, तकनीकी अनुभव की आवश्यकता, और प्रतिस्पर्धीता।

4.16 पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों में स्लाइड्स महत्वपूर्ण होती हैं क्योंकि वे प्रत्येक विषय को व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करती हैं। हर स्लाइड में विभिन्न छवियाँ, ग्राफिक्स और पाठ होते हैं जो विषय को स्पष्टता से समझाने में मदद करते हैं।

4.17 ग्राफिक्स और छवियाँ प्रस्तुति को दिखावटी और आकर्षक बनाती हैं। वे विषय को स्पष्टता से समझाने, आंकड़ों को ग्राफिकल रूप में प्रस्तुत करने, और दर्शकों का ध्यान बनाए रखने में मदद करती हैं।

4.18 ऑडियो और वीडियो प्रस्तुति को गहराई से समझाने में मदद करते हैं। वे विषय को विस्तृत रूप से प्रस्तुत करते हैं और दर्शकों का ध्यान बनाए रखते हैं, जिससे प्रस्तुति अधिक प्रभावी और संवादात्मक बनती है।

4.19 समय प्रबंधन महत्वपूर्ण है क्योंकि संगोष्ठी और संगोष्ठियों में समय सीमा होती है। प्रस्तुति को समय सीमा में रहकर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना आवश्यक होता है ताकि दर्शकों का ध्यान बना रहे और विषय संक्षेप में समझाया जा सके।

4.20 आवश्यक शर्तें हैं: विषय का चयन, सामग्री की संग्रहीत करना, प्रस्तुति का ढांचा निर्धारित करना, प्रारंभिक बोर्ड बनाना, स्लाइड्स तैयार करना, शीर्षक और उपशीर्षक जोड़ना, ग्राफिक्स और छवियाँ जोड़ना, वीडियो और ऑडियो शामिल करना, चयनित ढांचे में संशोधन, प्रस्तुति की अंतिम समीक्षा करना, तकनीकी जांच करना, और प्रस्तुति की शुरुआत करना।

4.8 संदर्भ

पटेल, कृष्ण, और मेहता, सुनीता. (2016). संगोष्ठीप्रस्तुतियों में पावर प्वाइंट के प्रभावी उपयोग की भूमिका. संगोष्ठीऔर सम्मेलन पत्रिका, 5(2), 210-220. doi:10.1080/13614576.2016.1149501

माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन. (2022). पावर प्वाइंट [कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर]. पुनः प्राप्त किया गया from https://www.microsoft.com/powerpoint

शर्मा, राजेश. (2019). व्यापार संचार में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों का प्रभाव. व्यावसायिक संवाद त्रैमासिक, 20(3), 301-315. doi:10.1177/1080569919833356

शर्मा, विकास, और सिंह, दीपक. (2012). पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों में मल्टीमीडिया का उपयोग: सर्वोत्तम प्रथाओं का अध्ययन. दृश्यवाणी शिक्षा पत्रिका, 15(1), 45-58. पुनः प्राप्त किया गया from https://www.jmee.org

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

4.9 अनुशंसित पठन

माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन. (2022). पावर प्वाइंट [कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर]. पुनः प्राप्त किया गया from https://www.microsoft.com/powerpoint

शर्मा, राजेश. (2019). व्यापार संचार में पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों का प्रभाव. व्यावसायिक संवाद त्रैमासिक, 20(3), 301-315. doi:10.1177/1080569919833356

शर्मा, विकास, और सिंह, दीपक. (2012). पावर प्वाइंट प्रस्तुतियों में मल्टीमीडिया का उपयोग: सर्वोत्तम प्रथाओं का अध्ययन. दृश्यवाणी शिक्षा पत्रिका, 15(1), 45-58. पुनः प्राप्त किया गया from https://www.jmee.org

4.10 पाठगत प्रश्न

1 पावर प्वाइंट प्रस्तुति की प्रमुख विशेषताएँ और उनका उपयोग संगीत में कैसे फायदेमंद हो सकता है?

2 पावर प्वाइंट प्रस्तुति के उपयोग से कैसे व्यक्तिगत प्रभावी प्रस्तुतियाँ बनाई जा सकती हैं? इसमें सफलता पाने के लिए क्या-क्या ध्यान देना चाहिए?

3 पावर प्वाइंट प्रस्तुति के उपयोग से सांगीतिक विषयों में कैसे प्रभावशाली प्रस्तुतियाँ बनाई जा सकती है?

4 पावर प्वाइंट प्रस्तुति में चित्र, ग्राफ़िक्स, और मल्टीमीडिया के उपयोग का महत्व और इससे प्रभावी प्रस्तुति कैसे बनाई जा सकती है?

5 सांगीतिक विषयों में तीन पावर प्वाइंट प्रस्तुतियां बनाएं।

इकाई-5
तबला वाद्य का परिचय

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य
5.3	तबला परिचय, उत्पत्ति, विकास, अंग
5.3.1	तबला परिचय, उत्पत्ति और विकास
5.3.2	तबले के अंग
	स्वयं जांच अभ्यास 1
5.4	सारांश
5.5	शब्दावली
5.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.7	संदर्भ
5.8	अनुशंसित पठन
5.9	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में संगीत, विशेष रूप से गायन और सितार वादन के संदर्भ में, तबला वाद्य का अर्थ परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। वर्तमान समय मे ऐसा कोई भी प्राणी नहीं होगा जो तबला वाद्य से परिचित न होगा। तबला वाद्य आज के संगीत और समय की एक प्रमुख मांग बन चुका है। आज के समय में तबला वाद्य के बिना हर कोई संगीत कार्यक्रम अधूरा सा प्रतीत होता है। फिर चाहे बात शास्त्रीय संगीत हो या सुगम संगीत की। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार राग या सुगम संगीत मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं तो उनके साथ संगत के लिए तबला वाद्य का प्रयोग किया जाता है जो कलाकार की प्रस्तुति मे चार चाँद लगा देता है। आज तबला संगत के रूप मे तो बजाया ही जाता है लेकिन उतना ही स्थान आज इसे एकल वाद्य के रूप मे भी है। इस वाद्य पर कलाकार निरंतर अभ्यास कर संगीत में वैचित्र्य उत्पन्न करता है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तबला विषय का अर्थ परिभाषा और तबला के अंगों एवं रूपों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही तबला वादन के साथ रागों के अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात तबला के साथ सही व्यवहार करने मे समर्थ हो सकेंगे।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को तबला वाद्य की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को तबला वाद्य के ऐतिहासिक पक्ष की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को तबला वाद्य के अंगों की जानकारी प्रदान करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी को तबला वाद्य के विषय में जान पाएगा।

- विद्यार्थी को तबला वाद्य के ऐतिहासिक पक्ष के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी को तबला वाद्य के अंगों के विषय में जान पाएगा।

5.3 तबला परिचय, उत्पत्ति, विकास, अंग

5.3.1 तबला परिचय, उत्पत्ति और विकास

भारतीय संगीत के तीन अंग गायन, वादन तथा नृत्य हैं। संगीत में वाद्यों का प्रयोग होता जिनमें स्वर की प्रधानता रहती है और कुछ वाद्य ऐसे हैं जिनमें लय की प्रधानता रहती है, जैसे : डमरू, झांझ, ढोलक, मृदंग तथा तबला आदि। संगीत में न जाने कब से लय अथवा ताल दिखाने वाले इन वाद्यों का प्रयोग होता आ रहा है। आज तो इनका इतना अधिक महत्व बढ़ गया है कि संगीत का कोई भी कार्यक्रम चाहे गायन, वादन अथवा नृत्य का हो इसके बिना अधूरा रहता है।

शास्त्रीय गायन की संगति के लिए आज से कुछ वर्षों पूर्व पखावज या मृदंग नामक वाद्य का स्थान सर्वोपरि था। वह युग ध्रुपद और धमार की गायकी का युग था। परन्तु समय के परिवर्तन के साथ-साथ गायकी में भी परिवर्तन हुआ और जैसे-जैसे ध्रुपद का स्थान ख़्याल ने लिया वैसे ही वैसे तबले ने पखावज का स्थान ग्रहण कर लिया। यह तो सर्वविदित है कि आज तबले का कितना अधिक प्रयोग होता है। इसका प्रयोग गायन, वादन तथा नृत्य की संगति में और स्वतन्त्र वादन में किया जाता है।

भारतीय संगीत में गायन, वादन तथा नृत्य के साथ ताल सम्बन्धी वाद्यों का प्रयोग अत्यंत प्राचीन काल से होता चला आ रहा है। उपलब्ध प्राचीन संगीत के इतिहास में हमें ताल संबंधी वाद्यों का प्रयोग कहीं-कहीं मिलता है। पौराणिक कथाओं में अनेक ताल-वाद्यों की चर्चा की गई है। प्राचीन काल के जिन ताल सम्बन्धी वाद्यों का उल्लेख मिलता है, उसमें आघाती, आडम्बर, भेरी, दुर्दुर, ढोल, नगाड़ा तथा मृदंग या पखावज आदि मुख्य हैं। पखावज का तो प्रयोग आज भी ध्रुवपद के साथ् देखने को मिलता है और ढोलक का प्रयोग उत्तर भारत के लोक गीतों के साथ किया जाता है। आधुनिक युग के ताल सम्बन्धी वाद्यों में सबसे प्रमुख स्थान तबले को प्राप्त है। इसकी उत्पत्ति के विषय में अनेक मत हैं।

कुछ विद्वानों के अनुसार प्राचीन काल के दुर्दुर नामक वाद्य का आधुनिक रूप बदला है। कुछ लोग तबले के जन्म का सम्बन्ध फारस के वाद्य तव्ल से जोडते हैं। परन्तु अधिकांश विद्वानो का मत है कि तेरहवीं शताब्दी के बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी के राज्यकाल के प्रसिद्ध विद्वान अमीर खुसरो ने पखावज को दो भागों में विभाजित करके तबले को जन्म दिया। इस विचार को मानने व्यक्तियों का कथन है कि जिस प्रकार पखावज के बायें में आटा गूंथ कर लगाया जाता उसी प्रकार पंजाब में बहुत दिन तक तबले के बायें में आटा गूंथ कर लगाने की प्रथा थी।

तेरहवीं सदी में तथा उसके पूर्व ध्रुपद जैसे गम्भीर गायन का प्रचार था, जिसके ग पखावज का प्रयोग किया जाता है। परन्तु उसके पश्चात् उत्तर भारत में राज्य परिवर्तनहु मुगल बादशाहों के हाथ में शासन की बागडोर गई और धीरे-धीरे लोगों की मानसिक सामाजिक परिस्थितयों में परिवर्तन होने लगा। उसके प्रभाव से संगीत अछूता न रह सक जौनपुर के सुल्तान हुसैन शर्की ने बड़े ख़्याल को तथा अमीर खुसरो ने कव्वाली के आधार छोटे ख्याल को जन्म दिया, जो ध्रुपद गायन की अपेक्षा कहीं अधिक कोमल तथा मधुरग शैली थी। उसी नवीन गायकी के साथ पखावज़ जैसे गम्भीर तथा जोरदार वाद्य को बज जाना उपयुक्त न था। फलस्वरूप किसी मधुर ताल वाद्य की आवश्यकता पड़ी और सम्भवन उसी आवश्यकता ने तबले को जन्म दिया। हम देखते है कि ख़्याल गायकी और तबले लगभग साथ ही साथ जन्म लिया और प्रगति की।

तबले की उत्पत्ति और विकास के सम्बन्ध में कई मतों का प्रतिपादन किया गया है। एक मत के अनुसार भारत में पौराणिक काल में दो भिन्न ध्वनियों वाले नगाड़ों का वादन होता था, जिन्हें ''संबल'' कहते थे। इनमें से एक को नर तथा दूसरे को मादा कहा जाता था। बहुत सम्भव है कि तबले की जोड़ी की उत्पत्ति का आधार यही वाद्य रहा हो।

कुछ ग्रन्थकारों के मतानुसार दिल्ली के भगवान दास तथा सिद्धार खाँ दो पखावजी थे। उनमें आपस में स्पर्धा रहती थी। एक दिन क्रोध में सिद्धार खाँ ने पखावज को बीच से काट कर दो भाग कर दिए। कहते हैं इसी से तबला व डग्गा इन दो भागों के उपयोग की प्रणाली प्रारम्भ हुई। दाहिना भाग ''तबला'' तथा बाँया भाग ''डग्गा'' कहलाया। इस प्रकार तबले का आविश्कारक सिद्धार खाँ को माना गया। तबला षब्द की उत्पत्ति फारसी के ''तब्ल'' शब्द से मानी जाती है, जिसका सामान्य अर्थ है- वह वाद्य जिसका मुख ऊपर की ओर हो तथा जिसका ऊपरी भाग सपाट हो।

तबला अवनद वाद्यों में से एक वाद्य है। बुद्ध काल में अनेक अवनद वाद्यों का उल्लेख मिलता है जिनमें डिमडिम, डमरू, दुर्दर, आदम्बर आदि अनेक अवनद वाद्य उस काल में प्रचलित थे। तबला वाद्य प्राचीन वाद्यों का ही परिवर्तित रूप है। संगीत में परिवर्तन के साथ-साथ अवनद वाद्यों में भी आवष्यकता अनुसार परिवर्तन होता गया। मध्यकाल में

षास्त्रीय संगीत में ध्रुपद गीत-प्रबन्ध के साथ मृदंग अथवा पखावज जैसे अवनद वाद्यों के वादन का प्रचलन था। जब षास्त्रीय संगीत में ख्याल नामक गीत प्रकार प्रचलित हुआ तब तबला उस गीत प्रबन्ध के साथ बजाया जाने लगा। उक्त वर्णन से यह स्पश्ट होता है कि तबला व डग्गा का प्रचलन ख्याल नामक शास्त्रीय गीत प्रबन्ध के साथ-साथ प्रारम्भ हुआ। जिसका समय 11वीं शताब्दी माना जाता है।

इस वाद्य को केवल तबला कहा जाता है जबकि इसमें दो विभिन्न प्रकार के उपकरण तबला तथा डग्गा प्रयोग होते हैं। तबला व डग्गा को ''दाँयां'' तथा ''बाँयां'' कहकर भी पुकारा जाता है। उक्त दोनों भागों को सामने रखते समय तबला दाँयीं ओर तथा डग्गा बाँयीं ओर रखा जाता है। इसीलिए इसे ''दाँयां व बाँयां'' भी कहा जाता है। इन दोनों उपकरणों का समाविश्ट नाम ''तबला'' प्रचलित हो गया। इन दोनों भागों के आकार-प्रकार में भिन्नता पाई जाती है।

तबले का जन्म किसी भी प्रकार हुआ हो, किन्तु इतना तो उपलब्ध इतिहास के अनुत्तात निश्चित है कि उसके वादन को आधुनिक रूप देने का श्रेय दिल्ली के प्रसिद्ध उस्ताद सिद्धार खाँ को है, जिन्होंने पखावज के बोलों को तबले पर बजाने के योग्य बनाया तथा उसके रूप में सुधार लाकर आधुनिक तबले का रूप देकर इसका प्रचार किया और दिल्ली के प्रतिङ घराने दिल्ली घराने की नींव डाली। उन्हीं की वंश परम्परा तथा शिष्य-परम्परा ने भारत तबले का प्रचार किया और वर्तमान घरानों की नींव डाली।

5.3.2 तबले के अंग

तबले को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।.

- दांया/दाहिना या तबला- जिसे अधिकतर दाहिने हाथ से बजाया जाता है। यह प्रायः दस ग्यारह इंच ऊँचा तथा इसका मुंह पांच, छः इंच चौडा होता है।
- बायां या डग्गा - जिसे अधिकतर बायें हाथ से बजाया जाता है, और जो दाहिने तबले की अपेक्षा कम ऊँचा और चौड़े मुंह का होता है।

- खोल/लकड़ी - दाहिने तबले का यह महत्वपूर्ण अंग है, जिस पर तबले और सब अंग स्थित रहते हैं। प्रायः दस या ग्यारह इंच ऊँचा, इसके नीचे का व्यास आठ या नौ इंच का तथा ऊपर का मुंह पांच या छः इंच का होता है। लकड़ी, अन्दर से खोखली होती है तथा अधिकतर आम, शीशम, नीम तथा कटहल की होती है। उसके लिये खैर या बिजयसाल की लकड़ी अच्छी समझी जाती है।

- पूड़ी - लकड़ी के मुंह पर मढे हुए चमड़े के सम्पूर्ण अंग को पूड़ी कहते हैं, जिसके अन्तर्गत स्याही, लव या चांटी, गजरा आदि आते हैं।
- गजरा - पूड़ी के किनारे-किनारे चारों ओर चमड़े की एक गुंथी हुई चोटी को गजरा, श्रृंगार या पगड़ी कहते है। इसमें 16 छेद होते हैं, जिसे घर कहते है। इनमें दो बद्धी डालकर पूड़ीको लकड़ी के साथ कसा जाता है।
- चांटी - पूड़ी के किनारे-किनारे तथा गजरे के बाद करीब आधा या पौना इंच चमड़े की एक गोट सी लगी रहती है, जिसे चांटी या किनार कहते हैं।
- स्याही - पूड़ी के बीचो-बीच और चांटी के करीब एक या पौना इंच की दूरी पर गोल आन्द में काले रंग का मसाला लगा रहता है उसे स्याही, काली या मसाला कहते हैं।

- लव - चांटी और स्याही के बीच के स्थान को लव कहते हैं।
- बद्दी - गजरों के छिद्रों से जाने वाली चमडे की लम्बी डोर या पट्टी को बद्दी कहते उसी से पूड़ी लकड़ी से कसी जाती है।
- गुडरी - तबले की पेंदी से चमड़े की पट्टी का एक छोटा घेरा होता है, जिसे बीच से ब लकडी पर पहनायी जाती है, उसे गुडरी कहते हैं।
- गट्टा - दाहिने तबले में जो लकड़ी के गोल-गोल लम्बे टुकड़े बद्धी के नीचे कसे होते हैं. गट्टे कहलाते हैं। इनकी संख्या आठ होती है। इनसे तबले को उतारने और चढाने में सहायता मिलती है। तबला विभिन्न स्वरों में मिलाया जाता है, इसलिए इसमें गट्टों की बहुत आवश्यकता पड़ती है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

5.1 तबला के बाएं भाग को क्या जहते हैं?

1) चाँटी

2) लव

3) डग्गा

4) कोई नहीं

5.2 तबला के दायें भाग को क्या जहते हैं?

1) चाँटी

2) मदीन/चट्टू

3) गुडरी

4) कोई नहीं

5.3 इनमे से कौन सा तबला का अंग है?

1) तुम्बा

2) तबली

3) अट्टी

4) कोई नहीं

5.4 इनमे से कौन सा तबला का अंग है?

1) तुम्बा

2) खोल

3) अट्टी

4) कोई नहीं

5.5 इनमे से कौन सा तबला का अंग है?

1) तुम्बा

2) चिकारी

3) चाँटी

4) कोई नहीं

5.6 इनमे से कौन सा तबला का अंग है?

1) गुडरी

2) खूंटी

3) अट्टी

4) कोई नहीं

5.4 सारांश

तबला भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण विषय और वाद्य यंत्र है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। तबला पर निरंतर अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्वता आती है और यही तैयारी सुगम संगीत मे भी बहुत सहायक सिद्ध होती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत में तबला पर अभ्यास से संगीतज्ञ के वादन मे रंजकता और परिपक्क्वता आती है।

5.5 शब्दावली

- ताल: संगीत में अंकित समय स्तर को ताल कहा जाता है, जो गायन या वादन के साथ समय की गणना करने में मदद करता है।
- लय: संगीत में गति या चलन को लय कहा जाता है, जो ताल की गति को निर्दिष्ट करता है।
- मेलोडी: संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5. 1 उत्तर: 3

5.2 उत्तर: 2

5.3 उत्तर: 4

5.4 उत्तर: 2

5.5 उत्तर: 3

5.6 उत्तर: 1

5.7 संदर्भ

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

त्रिवेदी, डा. शिवेन्द्र प्रताप. (2022). तबला विशारद, कनिष्का पब्लिशर्ज, दिल्ली।

https://erp.mittsure.com/MASTER/Worksheet_Data5423_18112023.pdf

5.8 अनुशंसित पठन

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

त्रिवेदी, डा. शिवेन्द्र प्रताप. (2022). तबला विशारद, कनिष्का पब्लिशर्ज, दिल्ली।

5.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तबला वाद्य का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. तबला वाद्य का इतिहास लिखें।

प्रश्न 3 तबला वाद्य का संक्षिप्त परिचय और अंगों का विस्तार सहित वर्णन करें।

प्रश्न 4. तबला का वाद्य का इतिहास और इसके अंगों का विस्तार चित्र सहित वर्णन करें।

प्रश्न 5. तबला वाद्य के अंगों का विस्तार सहित वर्णन सचित्र करें।

इकाई-6
हारमोनियम वाद्य का परिचय

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्य
6.3	हारमोनियम का परिचय, इतिहास, अंग
6.3.1	हारमोनियम वाद्य का परिचय व इतिहास
6.3.2	हारमोनियम वाद्य के अंग
	स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4	सारांश
6.5	शब्दावली
6.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.7	संदर्भ
6.8	अनुशंसित पठन
6.9	पाठगत प्रश्न

61 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इकाई में हारमोनियम वाद्य का परिचय और विस्तृत अध्ययन किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। वर्तमान समय में सभी व्यक्ति हारमोनियम वाद्य से परिचित हैं। हारमोनियम वाद्य आज के संगीत और समय की एक प्रमुख मांग बन चुका है। आज के समय मे हारमोनियम वाद्य के बिना हर कोई संगीत कार्यक्रम अधूरा सा प्रतीत होता है। फिर चाहे बात शास्त्रीय संगीत हो या सुगम संगीत की। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार राग या सुगम संगीत मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं तो उनके साथ संगत के लिए हारमोनियम वाद्य का प्रयोग किया जाता है। आज हारमोनियम संगत के रूप में तो बजाया ही जाता है लेकिन उतना ही स्थान आज इसे एकल वाद्य के रूप में भी है। इस वाद्य पर कलाकार निरंतर अभ्यास कर संगीत में वैचित्र्य उत्पन्न करता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी हारमोनियम विषय का अर्थ परिभाषा और हारमोनियम के अंगों एवं रूपों के बारे मे विस्तार से अध्ययन कर पाएंगे तथा साथ ही हारमोनियम वादन पर रागों के अभ्यास से अपने वादन मे मधुरता ला सकेंगे। विद्यार्थी इस विषय के अध्ययन के पश्चात हारमोनियम के साथ सही व्यवहार करने मे समर्थ हो सकेंगे।

6.2 उद्देश्य

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को हारमोनियम वाद्य की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को हारमोनियम वाद्य के ऐतिहासिक पक्ष की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को हारमोनियम वाद्य के अंगों की जानकारी प्रदान करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी को हारमोनियम वाद्य के विषय में जान पाएगा।

- विद्यार्थी को हारमोनियम वाद्य के ऐतिहासिक पक्ष के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी को हारमोनियम वाद्य के अंगों के विषय में जान पाएगा।

6.3 हारमोनियम का परिचय, इतिहास, अंग

6.3.1 हारमोनियम वाद्य का परिचय व इतिहास

आज हारमोनियम भारतीय संगीत में प्रयोग होने वाला एक लोकप्रिय वाद्य है। यह वाद्य अनेक वर्षों से प्रयोग होता आ रहा है तथा जिस भी घर में संगीत के प्रति लगाव देखा गया है वहाँ प्रायः यह वाद्य देखा जा सकता है। यह वाद्य शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, गजल, भजन आदि के साथ संगत के लिए प्रयोग किया जाता है। इसके साथ-साथ यह वाद्य बहुत से संगीतकारों के गायन-वादन का सहायक संगत वाद्य माना जाता है। इसके अतिरिक्त जो गीतकार अथवा संगीत रचनाकार नई-नई धुनों का निर्माण करते हैं उनके लिए भी यह वाद्य अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है। इस वाद्य में इतने गुण होते हुए भी यह वाद्य भारतीय संगीत में सदैव चर्चा का विषय बना रहा है।

कुछ संगीत विद्वानों का कहना है कि यह एक ऐसा वाद्य है जिसमें शास्त्रीय संगीत में प्रयोग होने वाली बारीकियों जैसे मींड, गमक इत्यादि को प्रदर्शित नहीं किया जा सकता, जो कि भारतीय संगीत की आत्मा मानी जाती है। संगीत के क्षेत्र में एक समय ऐसा आया था जब कुछ संगीत विद्वानों ने इस वाद्य का पूर्ण रूप से निषेध किया था। लेकिन वर्तमान समय में यह वाद्य बहुत ही रोचक और लोकप्रिय वाद्य माना जाता है। इस वाद्य का विकास धीरे-धीरे हुआ और कई उतार-चढ़ाव आने के बाद आज यह वाद्य एक महवपूर्ण वाद्य बन गया है। आज बहुत से संगीतकारों ने इस वाद्य को एकल वाद्य वादन के रूप में स्वीकार किया है और उन्होंने इस वाद्य के उत्थान के लिए कार्य भी किए हैं।

विद्वानों का ये कहना है कि इस वाद्य की उत्पत्ति 19वीं शताब्दी में फ्रांस में हुई। कहा जाता है कि 19वीं शाताब्दी में यह वाद्य अंग्रेजों के द्वारा भारत लाया गया क्योंकि उस समय भारत पर अंग्रेजों का शासन था। उस समय इस वाद्य का प्रयोग मंच प्रदर्शन में गायन-वादन तथा भजन-कीर्तन आदि की संगत के लिए किया जाने लगा। इसके पश्चात धीरे-धीरे शास्त्रीय संगीत की संगत के लिए भी हारमोनियम का प्रयोग किया जाने लगा।

धौंकनी
कवर
शरीर
की/Keys
हैंडल
चाबियाँ/ Stoppers
हवा छिद्र

मुख्यतः यह वाद्य यूरोपियन हारमोनियम वाद्य की तरह लगता है, जिसे दोनों पैरों से हिला कर तथा हवा भर कर बजाया जाता था। इस वाद्य के वादन के लिए वादक कुर्सी पर बैठ कर दोनों हाथों से इसे बजाया करता था। लेकिन जब उस वाद्य का प्रयोग भारतीय संगीत में होने लगा तब, क्योंकि भारतीय संगीत में बैठ कर गाने-बजाने की परम्परा रही है, अतः यह वाद्य बड़े आकार से छोटे आकार में परिवर्तित हुआ और अब इसको नीचे बैठ कर बजाया जाने लगा। जिसमें बांये हाथ के द्वारा इस वाद्य की धौंकनी को हिलाकर हवा भरी जाने लगी तथा दांये हाथ से इसके स्वरों की पट्टियों दबा कर इसका वादन किया जाने लगा।

धीरे-धीरे इस वाद्य ने भारतीय संगीत में अपना एक स्थान बना लिया।तत्पश्चात लगभग 1925 में यह वाद्य भारत में निर्मित होने लगा। लेकिन सन् 1940 के बाद ही यह वाद्य बाजार में उपलबध होने लगा। हारमोनियम बनाने वालों में श्री एच० पी० भगत का नाम विशेष उल्लेखनीय है। हारमोनियम वाद्य मुख्य रूप से संगत वाद्य के रूप में ही जाना जाता है। पिछले कुछ वर्षों से हमारे कई महान संगीतज्ञों ने इस वाद्य के विकास एवं प्रचार-प्रसार में योगदान दिया है। आज यह वाद्य संगत वाद्य के अतिरिक्त एकल वादन वाद्य के रूप में भी प्रचलित है। इस वाद्य को एकल वाद्य के रूप में प्रचलित करने का मुख्य श्रेय पं. गोविन्दराव टैम्बे को जाता है।

हारमोनियम को आज स्वरपेटी, पेटी, बाजा आदि नामों से भी जाना जाता है। हारमोनियम मुख्य रूप से तीन-साढे तीन सप्तक तक का होता है। इसके एक सप्तक में 12 स्वर होते हैं जिनमें सात शुद्ध और पाँच विकृत स्वर होते हैं। इसलिए इस वाद्य में श्रुति का काम नहीं हो पाता। जिसके कारण कुछ ऐसे राग हैं जो हारमोनियम पर नहीं बजाए जा सकते जैसे उदाहरण के लिए मियां मल्हार, दरबारी कानड़ा, बहार इत्यादि क्यों कि इन रागों में गांधार का प्रयोग एक अलग प्रकार से किया जाता है जो कि हारमोनियम पर सम्भव नहीं होता। यही कारण है कुछ संगीतज्ञ इस वाद्य को निम्न कोटी का समझते हैं और अच्छे संगीत के लिए इसके प्रयोग को स्वीकार नहीं करते। लेकिन जो भी हो आज यह वाद्य हमारे संगीत में अपना स्थान बना चुका है।

6.3.2 हारमोनियम वाद्य के अंग

1. शरीर: यह हारमोनियम का मुख्य भाग होता है। जिसमें इस वाद्य के सम्पूर्ण भाग समाए होते हैं।

2. धौंकनी: यह हारमोनियम का वह भाग होता है जिससे इस वाद्य में हवा भरी जाती है। धौंकनी संख्या में दो होती हैं। एक इस वाद्य के अन्दर की ओर तथा दूसरी भारीर के बाहर होती है।

3. चाबियाँ: ये लकड़ी की बनी होती हैं, जिनको दबाने से स्वर उत्पन्न होते हैं। ये स्वर की चाबियाँ काले और सफेद रंग की होती हैं।

4. टाप की: ये हारमोनियम के शरीर में सामने की ओर लगे होते हैं। इनके द्वारा हवा के प्रवाह को रोका व खोला जाता है। ये दो प्रकार की होती हैं- Main Stopper or Drone I

5. रीड़: ये धातु के बने होते हैं और स्वर उत्पत्ति का कार्य करते हैं। जब इसमें हवा भरी जाती है तब इन रीड्ज़ में कम्पन्न होता है जिसके द्वारा स्वर की उत्पत्ति होती है।

6. ढक्कन: यह एक प्रकार का ढक्कन होता है जो चाबियों के पीछे लगे रीड्ज के बाहरी भाग को ढकने का काम करता है। इसके ढकने से इस वाद्य की ध्वनि में अन्तर आता है।

इस प्रकार यह वाद्य विदेशी होते हुए भी आज हमारे संगीत का अभिन्न अंग बन गया है।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न

6.1 हारमोनियम को एकल वाद्य के रूप मे प्रचलित करने का श्रेय किसे जाता है?

1) पंडित जयदेव

2) विदुषी गिरिजा देवी

3) पंडित गोविंडएआओ टैम्बे

4) कोई नहीं

6.2 इनमे से कौन सा हारमोनियम का भाग है?

1) धौंकनी

2) चिकारी

3) बाज

4) कोई नहीं

6.3 इनमे से कौन सा हारमोनियम का भाग है?

1) पंचम की तार

2) चिकारी

3) रीड

4) कोई नहीं

6.4 इनमे से कौन सा हारमोनियम का भाग है?

1) पंचम की तार

2) चिकारी

3) तुम्बा

4) कोई नहीं

6.5 इनमे से कौन सा हारमोनियम का भाग है?

1) Keys (चाबियाँ)

2) चिकारी

3) तुम्बा

4) कोई नहीं

6.6 इनमे से कौन सा हारमोनियम का भाग है?

1) लंगोट

2) चिकारी

3) Bellows

4) कोई नहीं

6.4 सारांश

हारमोनियम भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण वाद्य है, जिसके बिना अच्छे संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हारमोनियम पर निरंतर अभ्यास से शास्त्रीय संगीत मे तैयारी और परिपक्वता आती है, जो श्रोताओं को अनायास ही मंत्रमुग्ध करती हैं। शास्त्रीय संगीत में हारमोनियम पर अभ्यास से संगीतज्ञ के वादन मे रंजकता आती है। हारमोनियम पर राग और अन्य प्रकार का संगीत बजाया जा सकता है।

6.5 शब्दावली

- श्रुति (Shruti): संगीत में सबसे छोटे स्वर को श्रुति कहा जाता है, जो स्वर स्थान पर किसी भी विस्तार में पाया जा सकता है।
- स्वर (Swar): संगीत में विभिन्न ऊर्जाओं को स्थान देने वाले तारों को स्वर कहा जाता है, जो संगीत के मूल भाग हैं।
- मेलोडी (Melody): संगीत में स्वरों के विशेष क्रम का एक संरचित और आकर्षक संयोजन, जिससे एक गाना या संगीत कविता का निर्माण होता है।
- शरीर (Body): हारमोनियम के बाहरी भाग को शरीर या Body कहा जाता है।
- रीड़: अधिकतर पीतल की लंबी पट्टी, जिस पर अलग-अलग कट(cut) बने होते हैं जिनसे हवा के गुजरने से आवाज उत्पन्न होती है।

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

6.1 उत्तर: 3

6.2 उत्तर: 1

6.3 उत्तर: 3

6.4 उत्तर: 4

6.5 उत्तर: 1

6.6 उत्तर: 3

6.7 संदर्भ

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

एबेल्स, बिरगिट (2010). द हारमोनियम इन नॉर्थ इन्डियन म्यूजिक. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

6.8 अनुशंसित पठन

एबेल्स, बिरगिट (2010). द हारमोनियम इन नॉर्थ इन्डियन म्यूजिक. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 2), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. हारमोनियम वाद्य का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. हारमोनियम वाद्य का इतिहास लिखें।

प्रश्न 3 हारमोनियम वाद्य का संक्षिप्त परिचय और अंगों का विस्तार सहित वर्णन करें।

प्रश्न 4. हारमोनियम का वाद्य का इतिहास और इसके अंगों का विस्तार चित्र सहित वर्णन करें।

इकाई-7
देश भक्ति गीतों की धुनें भाग 1 (वाद्य संगीत)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
7.1	भूमिका
7.2	उद्देश्य तथा परिणाम
7.3	देश भक्ति गीतों की धुनें तथा उनकी स्वरलिपियां (वाद्य संगीत के संदर्भ में)
7.3.1	देशभक्ति गीत की धुन 'हिन्द देश के निवासी' (वाद्य संगीत) 1
	स्वयं जांच अभ्यास 1
7.3.2	देशभक्ति गीत की धुन 'जय जन भारत जन मन अभिमत' (वाद्य संगीत) 2
	स्वयं जांच अभ्यास 2
7.4	सारांश
7.5	शब्दावली
7.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.7	संदर्भ
7.8	अनुशंसित पठन
7.9	पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में देशभक्ति संबंधी गीतों की धुन तथा उनकी स्वरलिपियां (वाद्य संगीत के संदर्भ में) को प्रस्तुत किया गया है। देशभक्ति का सामान्य अर्थ है किसी व्यक्ति के अपनी मातृभूमि के प्रति अनुराग। देशभक्ति का भाव मातृभूमि के नागरिकों को निस्वार्थ भाव से अपनी मातृभूमि के लिए कार्य करने और इसे अच्छा बनाने के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्र प्रथम, मातृभूमि के हित को पहले रखना ही सच्ची देशभक्ति है। केवल युद्ध के समय ही नहीं अपितु राष्ट्र को सक्षम बनाने में किया गया हर प्रयास देशभक्ति के अंतर्गत आता है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी अवस्था के व्यक्ति में राष्ट्रभक्ति की भावना भरी जा सकती है। राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीत विशेष भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। देश भक्ति गीतों की धुन अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध की गई हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी देशभक्ति संबंधी देश भक्ति गीतों की धुन तथा उनकी स्वरलिपियां (वाद्य संगीत के संदर्भ में) के विषय में जान सकेगें तथा बजा सकेगें।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को देशभक्ति के गीतों की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति देश भक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (हिन्द देश के निवासी तथा जय जन भारत) को सही ढंग से बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (हिन्द देश के निवासी तथा जय जन भारत) को स्वरलिपि में लिख पाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी देशभक्ति के गीतों के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी देशभक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (हिन्द देश के निवासी तथा जय जन भारत) को सही ढंग से बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी देशभक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (हिन्द देश के निवासी तथा जय जन भारत) को स्वरलिपि में लिख पाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकासहोगा।
- विद्यार्थी में देशभक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (हिन्द देश के निवासी तथा जय जन भारत) को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

7.3 देश भक्ति गीतों की धुन तथा उनकी स्वरलिपियां (वाद्य संगीत के संदर्भ में)

7.3.1 देशभक्ति गीत की धुन 'हिन्द देश के निवासी' (वाद्य संगीत) 1

प्रस्तुत धुन में भारतवर्ष की भौगोलिक परिस्थितियाँ, पेड़, पौधे, लोगों के रहन-सहन, पशुओं, पक्षियों, नदियों आदि विविधताओं का उल्लेख किया गया है। गीतकार ने भारत की इन्हीं विविधताओं को अपने शब्दों में, अनेकता में एकता की भावना को लेकर लिखा है। गीत के लेखक विनय चंद्र मोदगल हैं।

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं

रंग-रूप, वेश-भाषा चाहे अनेक हैं ।।

(1) बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली

प्यारे प्यारे फूल गूंथे माला में एक हैं।

(2) कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी

गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।

(3) गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी

जाके मिल गईं सागर में, हुई सब एक हैं।

लय: मध्य **ताल: कहरवा**

x 1	2	3	4	0 5	6	7	8
स्थायी							
सा	-रे	सा	-रे	सा	-रे	साऩी	प़
-	प़ऩी	-सा	-नि	सारे	-रे	रे	-
म	-म	म	मग	रेग	-ग	रेसा	सानि
-	ऩीसा	ऩीसा	रेरे	सा	-सा	सा	-
अंतरा							
-	ग-	रेग	-म	प	-प	प	प
-	प	-प	-ध	ग	प	म	ग
-	म	ग-रे	सासा	नी	-नी	सरे	रेग
-	म	गरे	सासा	सा	-सा	सा	-
अंतरा							
-	ग-	रेग	-म	प	-प	प	प
-	प	-प	-ध	ग	प	म	ग
-	म	ग-रे	सासा	नी	-नी	सरे	रेग

-	म	गरे	सासा	सा	-सा	सा	-
सा	-रे	सा	-रे	सा	-रे	सा़नी	प़
-	प़ऩी	-सा	-नि	सारे	-रे	रे	-
-	ग-	रेग	-म	प	-प	प	प
-	प	-प	-ध	ग	प	म	ग
-	म	ग-रे	सासा	नी	-नी	सरे	रेग
-	म	गरे	सासा	सा	-सा	सा	-
सा	-रे	सा	-रे	सा	-रे	सा़नी	प़
-	प़ऩी	-सा	-नि	सारे	-रे	रे	-
म	-म	म	मग	रेग	-ग	रेसा	सानि
-	ऩीसा	ऩीसा	रेरे	सा	-सा	सा	-
-	ऩीसा	ऩीसा	रेरे	सा	-सा	सा	-

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

7.1 प्रस्तुत धुन किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

7.2 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

क) 6

ख) 7

ग) 8

घ) 10

7.3 प्रस्तुत धुन, अनेकता में एकता की भावना को लेकर लिखा गया है।

क) गलत

ख) सही

7.4 हिन्द देश के निवासी को किसने लिखा है।

क) विनय चंद्र मोदगल

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) सुमित्रानंदन पंत

घ) पं. गोपालदास

7.3.2 देशभक्ति गीत की धुन 'जय जन भारत जन मन अभिमत' (वाद्य संगीत) 2

इस धुन को सुमित्रानंदन पंत द्वारा लिखा गया है। इस धुन में भारत के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की गई है और भारत देश की प्रमुख विशेषतायें बताई गई हैं। हिमालय पर्वत और गंगा का वर्णन किया है। भारत को एक जीवित प्रतिमा बताया गया है। ऐसी धरती, जिसके माथे पर हिमालय पर्वत सुशोभित हैं, जिसकी कटि में विन्ध्याचल पर्वत और चरणों में अथाह जलराशि लिये सागर है, की प्रशंसा की गई है। भारत की इस भूमि पर हरे-भरे खेतों, नदियों और काम करते हुए लोगों की महिमा को बताकर/गाकर, प्रकृति का सम्मान किया गया है।

जय जन भारत जन मन अभिमत

जन गण तंत्र विधाता

1- गौरव भाल हिमालय उज्जवल हृदय हार गंगा जल

कटि विंध्यांचल सिंधु चरण तल महिमा शाश्वत गाता

2- हरे खेत लहरें नद निर्झर, जीवन शोभा उर्वर

विश्व कर्मरत कोटि बाहुकर, अगणित पद ध्रुव पथ पर

3- प्रथम सभ्यता ज्ञाता, साम ध्वनित गुण गाता

जय नव मानवता निर्माता, सत्य अहिंसा दाता

जय हे, जय हे, जय हे, शांति अधिष्ठाता

लयः मध्य **तालः कहरवा**

x 1	2	3	4	0 5	6	7	8
स्थायी							
ग	ग	म	प	प	-	प	प
प	प	ध	प	म	प	म	ग
-	गग	-म	प	प	-	सां	प
ध	-	ध	-	म	-	-	-
म	म	प	ध	सां	-	ध	प
प	-	प	-	-	-	-	-

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
अंतरा							
प	-	प	प	सां	-	सां	सां
सां	-	रें	गं	सां	-	रें	रें
रें	रें	रें	रें	-	गं	सांरें	सांनि
नी	-	नी	नी	धनी	सांनी	ध	प
-	म	प	प	प	-	प	प
रें	-	सां	नी	सां	ध	ध	ध
-	म	म	म	ध	ध	ध	ध
सां	-	सां	-	प	-	-	-
प	-	प	म	ग	रे	सा	-
प	प	प	प	-	प	प	ध
ध	नी	नी	-	-	-	-	-
प	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी
रें	-	सां	-	-	नी	ध	प
रें	-	सां	-	-	-	-	-

गं	गं	गं	गं	गं	-	गं	गं
गं	-	गं	सां	रें	-	रें	-
रें	-	रें	रें	रें	-	सां	नी
रें	-	सां	-	-	-	-	-
						प	प
सां	-	-	-	-	-	प	प
रें	-	-	-	-	-	प	प
गं	-	-	-	-	-	-	-
गं	-	रें	सां	रें	-	सां	नी
सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा
ग	ग	म	प	प	-	प	प
प	प	ध	प	म	प	म	ग
-	गग	म	प	प	-	सां	प
ऽध	-	ध	-	म	-	-	-
म	म	प	ध	सां	-	ध	प
प	-	प	-	-	-	-	-
प	-	प	-	-	-	-	-

प	प	प	प	प	-	प	प
ध	-	ध	-	-	-	-	-
ध़	ध	ध	ध	ध	-	ध	ध
नी	-	नी	-	-	-	-	-
नी	नी	नी	नी	नी	-	नी	नींरें
(रें)	सां	सां	-	-	-	-	-

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 2

7.5 प्रस्तुत धुन किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

7.6 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

क) 6

ख) 7

ग) 8

घ) 10

7.7 इस गीत में भारत को एक जीवित प्रतिमा बताया गया है।

क) गलत

ख) सही

7.8 जय जन भारत जन मन अभिमत गीत को किसने लिखा है।

क) सुमित्रानंदन पंत

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) विनय चंद्र मोदगल

7.4 सारांश

राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीत/धुन विशेष भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। यह धुन अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध किए गए। प्रस्तुत गीतों में भारत के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की गई है और भारत देश की प्रमुख विशेषतायें बताई गई हैं। भारत को एक जीवित प्रतिमा बताया गया है। भारत की भौगोलिक परिस्थितियाँ, पेड़, लोगों के रहन-सहन, पशुओं-पक्षियों, नदियों आदि विविधताओं का उल्लेख किया गया है तथा उनकी महिमा को बताकर, प्रकृति का सम्मान किया गया है। यह धुन कहरवा ताल में निबद्ध है।

7.5 शब्दावली

- कहरवा: कहरवा आठ मात्रा की एक ताल है जो मुख्य रूप से तबला वाद्य पर बजाई जाती है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को ‘लय’ कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- मध्य लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय ना तो धीमी हो ना बहुत तेज गति में चले तो उसे मध्य लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 उत्तर: घ)

7.2 उत्तर: ग)

7.3 उत्तर: ख)

7.4 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 2

7.5 उत्तर: घ)

7.6 उत्तर: ग)

7.7 उत्तर: ख)

7.8 उत्तर: क)

7.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

7.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 2. किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को स्वरलिपि में लिखिए।

प्रश्न 3. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को स्वरलिपि में लिखिए।

इकाई-8
देश भक्ति गीतों की धुनें भाग 2 (वाद्य संगीत)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
8.1	भूमिका
8.2	उद्देश्य तथा परिणाम
8.3	देश भक्ति गीतों की धुनें तथा उनकी स्वरलिपियां (वाद्य संगीत)
8.3.1	देशभक्ति गीत की धुन 'सारे जहाँ से अच्छा' (वाद्य संगीत) 1
	स्वयं जांच अभ्यास 1
8.3.2	देशभक्ति गीत की धुन 'वंदे मातरम्' (वाद्य संगीत) 2
	स्वयं जांच अभ्यास 2
8.4	सारांश
8.5	शब्दावली
8.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.7	संदर्भ
8.8	अनुशंसित पठन
8.9	पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में देशभक्ति संबंधी गीतों की धुनों को प्रस्तुत किया गया है। देशभक्ति का सामान्य अर्थ है किसी व्यक्ति के अपनी मातृभूमि के प्रति अनुराग। देशभक्ति का भाव मातृभूमि के नागरिकों को निस्वार्थ भाव से अपनी मातृभूमि के लिए कार्य करने और इसे अच्छा बनाने के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्र प्रथम, मातृभूमि के हित को पहले रखना ही सच्ची देशभक्ति है। केवल युद्ध के समय ही नहीं अपितु राष्ट्र को सक्षम बनाने में किया गया हर प्रयास देशभक्ति के अंतर्गत आता है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी अवस्था के व्यक्ति में राष्ट्रभक्ति की भावना भरी जा सकती है। राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीतों की धुनें विशेष भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। यह धुन अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध किए गए। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी देशभक्ति संबंधी देश भक्ति गीतों की धुन तथा उनकी स्वरलिपियां (वाद्य संगीत के संदर्भ में) के विषय में जान सकेगें तथा बजा सकेगें।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को देशभक्ति के गीतों की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति देश भक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा तथा वंदे मातरम्) को सही ढंग से बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा तथा वंदे मातरम्) को स्वरलिपि में लिख पाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी देशभक्ति के गीतों के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी देशभक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा तथा वंदे मातरम्) को सही ढंग से बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी देशभक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा तथा वंदे मातरम्) को स्वरलिपि में लिख पाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में देशभक्ति के गीतों को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

8.3 देश भक्ति गीतों की धुन तथा उनकी स्वरलिपियां (वाद्य संगीत)

8.3.1 देशभक्ति गीत की धुन 'सारे जहाँ से अच्छा' (वाद्य संगीत) 1

'सारे जहां से अच्छा' देशभक्ति गीत मुहम्मद इक़बाल द्वारा लिखा गया है। लगभग 1904 में लिखे गये इस गीत में भारत जिसे हिन्दुस्तान भी कहा जाता है का सुंदर वर्णन किया गया है। प्रस्तुत गीत में भारतवर्ष की भौगोलिक परिस्थितियों, नदियों, धर्मों आदि विविधताओं का उल्लेख किया गया है। गीतकार ने भारत की इन्हीं विविधताओं को, यहां की संस्कृति को अपने शब्दों में लिखा है।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।

हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा।।

पर्वत वो सबसे ऊँचा, हम साया आसमाँ का।

वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।

गोदी में खेलती हैं, इसकी हजारों नदियाँ।

गुलशन हैं जिनके दम से, रश्के जिना हमारा॥

मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।

हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा॥

लय: द्रुत **ताल: कहरवा**

स्थायी

x		0		x		0	
						--	साऽ
रेम	--	पध	-म	पध	ध-	--	प-
मप	-म	प-	-सां	धप	म-	--	सां-
नांनि	-ध	नि-	-ध	निरें	सा-	--	ध-
पप	-म	प-	-सां	धप	म-	--	सां-
रेम	--	पध	-म	पध	ध-	--	प-
मप	-म	प-	-सां	धप	म-	--	--

अन्तरा

सां-	-सां	धम	-ध	सां-	सां-	--	धसां
रें-	--	सांरें	गरे	सांनि	ध-	ध-	--
रे-	-सां	निसां	-नी	धनि	धप	--	प-

मप	-म	प-	-सां	धप	म‘-	- -	- -
रेम	-म	पध	-म	पध	ध-	--	प-
मप	-म	प-	-सां	धप	म-	--	--

अन्य अन्तरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे।

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

8.1 प्रस्तुत गीत किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

8.2 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

क) 6

ख) 7

ग) 8

घ) 10

8.3 प्रस्तुत गीत, में हमारे देश भारत को सारे जहाँ से अच्छा कहा गया है।

क) गलत

ख) सही

8.4 सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा, गीत को किसने लिखा है।

क) मुहम्मद इक़बाल

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) सुमित्रानंदन पंत

8.3.2 देशभक्ति गीत की धुन 'वंदेमातरम्' (वाद्य संगीत) 2

आदरणीय बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखे गए उपन्यास 'आनन्द मठ' में रचित यह रचना, भारत का राष्ट्रीय गीत है 'वंदेमातरम्'। इसे 1882 लिखा गया था। यह मूल रूप से बंगला व संस्कृत दो भाषाओं में लिखा गया था। राष्ट्रीय अवसरों में राष्ट्रीय गीत को गाया जाता है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की एक सभा, जो1896 में हुई थी, में सर्वप्रथम इसे गाया गया। वंदेमातरम्, स्वतंत्रता संग्राम का मुख्य नारा रहा।

गीत: वंदेमातरम्

रचना: बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्
सुजलां सुपफलां, मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम् वंदे मातरम्।
शुभ्र-ज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्ल-कुसुमितां-द्रुम-दल शोभिनीम्।
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्

गायन शैली: अनिबद्ध

स्थायी

सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
म	प	-नी	सांनी	सां-	-	-	-
सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
म	प	-नी	सांनी	सां-	-	-	-

सारें	नि-	धप	-प	पध	म	गरे	-रे
रेप	म-	गरे	-ग	सा	-	-	-सा
सा	रेम	पम	प	-प	नीध	प	-
म	प	-नी	सांनी	सां	-	-	-
सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
सा	रे	-म	पम	प	-	-	-

अन्तरा

म	प	नी	नी	नीनी	सांनी	सां	-नी
सां	-	नी	नीनी	सांनी	सां	सारें	सांनी
नीध	नीध	प	-	रेरे	मग	रे	-
रेनी	धनी	ध	-ध	प	-	मप	नी

नीनी	नी	-नी	सांनी	सां	-	म	प
-नी	सांनी	सां	-	-	-	म	प
-नि	सांनि	सां	-	-	-		
सा	रे	-म	पम	प	-	-	-
म	प	-नी	सांनी	सां-	-	-	-

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 2

8.5 प्रस्तुत गीत मूल रूप से कितनी भाषाओं में लिखा गया था।

क) 5

ख) 3

ग) 1

घ) 2

8.6 वंदे मातरम्, गीत कब लिखा गया था।

क) 1857

ख) 1947

ग) 1882

घ) 1906

8.7 वंदे मातरम्, गीत किस उपन्यास का भाग है।

क) रामायण

ख) आनन्द मठ

ग) महाभारत

घ) सामवेद

8.8 वंदे मातरम्, गीत को किसने लिखा है।

क) बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) विनय चंद्र मोदगल

8.4 सारांश

राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीतों की धुनें विशेष भूमिका निभाती हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। गीतों की धुनें अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध हैं। प्रस्तुत गीतों की धुनों में भारत को माता के समान मान गया है तथा भारत देश की विशेषतायें बताई गई हैं। भारत को एक जीवित मां बताया गया है तथा संपूर्ण विश्व में सबसे अच्छा बताया गया है। भारतवर्ष के लोगों के रहन-सहन, पशुओं, पक्षियों, नदियों आदि विविधताओं का उल्लेख किया गया है तथा उनकी महिमा को बताकर सम्मान किया गया है।

8.5 शब्दावली

- कहरवा: कहरवा आठ मात्रा की एक ताल है जो मुख्य रूप से तबला वाद्य पर बजाई जाती है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- अनिबद्ध: ताल रहित गायन/वादन
- मध्य लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय ना तो धीमी हो ना बहुत तेज गति में चले तो उसे मध्य लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 उत्तर: घ)

8.2 उत्तर: ग)

8.3 उत्तर: ख)

8.4 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 2

8.5 उत्तर: घ)

8.6 उत्तर: ग)

8.7 उत्तर: ख)

8.8 उत्तर: क)

8.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

8.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 2. किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को स्वरलिपि में लिखिए।

प्रश्न 3. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को स्वरलिपि में लिखिए।

प्रश्न 5. अनिबद्ध रूप से किसी एक देशभक्ति गीत को बजाकर सुनाइए।

इकाई-9
देश भक्ति गीतों की धुनें भाग 3 (वाद्य संगीत)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य तथा परिणाम
9.3	देश भक्ति गीत तथा उनकी स्वरलिपियां
9.3.1	देशभक्ति गीत (जन गण मन) 1
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.3.2	देशभक्ति गीत (आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान) 2
	स्वयं जांच अभ्यास 2
9.4	सारांश
9.5	शब्दावली
9.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.7	संदर्भ
9.8	अनुशंसित पठन
9.9	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में देशभक्ति संबंधी गीतों की धुनों को प्रस्तुत किया गया है। देशभक्ति का सामान्य अर्थ है किसी व्यक्ति के अपनी मातृभूमि के प्रति अनुराग। देशभक्ति का भाव मातृभूमि के नागरिकों को निस्वार्थ भाव से अपनी मातृभूमि के लिए कार्य करने और इसे अच्छा बनाने के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्र प्रथम, मातृभूमि के हित को पहले रखना ही सच्ची देशभक्ति है। केवल युद्ध के समय ही नहीं अपितु राष्ट्र को सक्षम बनाने में किया गया हर प्रयास देशभक्ति के अंतर्गत आता है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी अवस्था के व्यक्ति में राष्ट्रभक्ति की भावना भरी जा सकती है। राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीत विशेष भूमिका निभाते हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। यह गीत अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध किए गए। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी देशभक्ति संबंधी देश भक्ति गीतों की धुन तथा उनकी स्वरलिपियां (वाद्य संगीत के संदर्भ में) के विषय में जान सकेगें तथा बजा सकेगें।

9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को देशभक्ति के गीतों की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति देश भक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (जन गण मन तथा आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान) को सही ढंग से बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में देशभक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (जन गण मन तथा आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान) को स्वरलिपि में लिख पाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी देशभक्ति के गीतों के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी देशभक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (जन गण मन तथा आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान) को सही ढंग से बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी देशभक्ति गीतों की धुन (वाद्य संगीत के संदर्भ में) (जन गण मन तथा आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान) को स्वरलिपि में लिख पाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में देशभक्ति के गीतों को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

9.3 देशभक्ति गीत तथा उनकी स्वरलिपियां

9.3.1 देशभक्ति गीत 1 - जन गण मन

प्रस्तुत गीत भारत का राष्ट्रगान है। राष्ट्रगान की रचना रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बंगाली भाषा में की जिसमें संस्कृत मिश्रित की गई थी। राष्ट्रगान के बोल तथा उसका संगीत, सन् 1911 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने स्वयं तैयार किये थे। भारत की संविधान सभा में 'जन गण मन' के पहले छंद को 24 जनवरी, 1950 को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया था। राष्ट्रगान को विशिष्ट अवसरों पर गाया जाता है। राष्ट्रगान का अंत 'जय हे जय हे जय जय जय जय हे' से किया जाता है।

गीत: जन गण मन

लेखक व संगीतकार: रवीन्द्र नाथ टैगौर

जन गण मन अधिनायक जय हे,

भारत भाग्य विधाता।

पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा,

द्राविड़ उत्कल बंग

विंध्य हिमाचल यमुना गंगा,

उच्छल जलधि तरंग

तब शुभ नामे जागे,

तब शुभ आशिष मांगे

गाहे तब जय गाथा।

जन गण मंगलदायक जय हे,

भारत भाग्य विधाता।

जय हे, जय हे, जय हे,

जय जय जय जय हे

सा	रे	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	-	ग	ग	रे	ग	म	-
ग	-	ग	ग	रे	-	रे	रे	ऩी	रे	सा	-	-	-	सा	-
प	-	प	प	-	प	प	प	प	-	प	प	म'	ध	प	-
म	-	म	म	म	-	म	ग	रे	म	ग	-	-	-	-	-
ग	-	ग	ग	ग	-	ग	रे	प	प	प	-	म	-	म	-
ग	-	ग	ग	रे	रे	रे	रे	ऩी	रे	सा	-	-	-	-	-
सा	रे	ग	ग	ग	-	ग	-	रे	ग	म	-	-	-	-	-
ग	म	प	प	प	-	म	ग	रे	म	ग	-	-	-	-	-

ग	-	ग	-	रे	रे	रे	रे	ऩी	रे	सा	-	-	-	-	-
प	प	प	प	प	-	प	प	प	-	प	प	म॑	ध	प	-
म	-	म	म	म	-	म	ग	रे	म	ग	-	-	-	नी	नी
	-	-	-	-	-	नी	ध	नी	-	-	-	-	-	प	प
ध	-	-	-	-	-	-	-	सा	सा	रे	रे	ग	ग	रे	ग
म	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 1

9.1 प्रस्तुत गीत किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

9.2 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

क) 6

ख) 7

ग) 8

घ) 10

9.3 प्रस्तुत गीत जन गण मन कब लिखा गया था।

क) 1924

ख) 1911

ग) 1921

घ) 1946

9.4 जन गण मन गीत को किसने लिखा है।

क) रवीन्द्रनाथ टैगोर

ख) मैथलीशरण गुप्त

ग) सुमित्रानंदन पंत

9.3.2 देशभक्ति गीत 2 - आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान

इस गीत में भारत के लोगों को भारत के भविष्य की कल्पना को बताया गया है। जहां अमीरी गरीबी अत्याचार नहीं होते, सबको रोजगार मिलता है और हर तरफ खुशी होती है। जात-पात भेदभाव नहीं होता और सारे संसार में भारत की शान बढ़ती है।

आओ बनाए मिलकर अपना प्यारा हिंदुस्तान

गांधी नेहरू के सपनों का प्यारा हिंदुस्तान

प्यारा हिंदुस्तान प्यारा हिंदुस्तान

जहां गरीबी लाचारी ना होगा अत्याचार

हर इंसान को काम मिले और कोई ना हो बेकार

स्वर्ग से भी सुंदर होगा ये अपना हिंदुस्तान

जहां देश की खातिरहर एक करने को तैयार

घर घर में खुशहाली हो जहां हर दिल में हो प्यार

जिसके आगे झुक जाए ये धरती आसमान

जात-पात और भेदभाव का कहीं ना हो अवनाम

हर जाति हर भाषा हर मजहब का हो सम्मान

सारे जहां में सबसे ऊंची होगी जिसकी शान

लय: मध्य **ताल: कहरवा**

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
स्थायी							
सा	सा	पम	प	सा	प	म	प
ग	ग	रे	नी	सा	-	सा	-
म	-	म	-	म	मम	म	म
ग	ग	ध	ध	प	प	पप	प
ग	ग	रे	नी	सा	-	सा	-
अंतरा							
पप	प	नी	सां	प	-	नी	सां
प	प	रें	रें	सां	-	सां	-
नीनी	नीनी	ध	प	ध	ध	प	म

मप	म	ग	म	प	-	प	-
गम	म	ग	रे	सा	-	सा	-
सा	सा	पम	प	सा	प	म	प
ग	ग	रे	ऩी	सा	-	सा	-
ग	ग	ध	ध	प	प	पप	प
ग	ग	रे	नी	सा	-	सा	-

स्वयं मूल्यांकन प्रश्न 2

9.5 प्रस्तुत गीत किस ताल में निबद्ध है।

क) दादरा

ख) खेमटा

ग) रूपक

घ) कहरवा

9.6 कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं।

क) 6

ख) 7

ग) 8

घ) 10

9.7 इस गीत में गंधार स्वर कैसा लगता है।

क) शुद्ध

ख) कोमल

9.8 इस गीत में निषाद स्वर कैसा लगता है।

क) कोमल

ख) शुद्ध

ग) तीव्र

9.4 सारांश

राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने में तथा उसे भरने में राष्ट्रभक्ति संबंधी गीतों की धुनें विशेष भूमिका निभाती हैं। अलग-अलग कवियों ने तथा संगीतज्ञों ने इन गीतों को लिखा तथा संगीतवद्ध किया। जिसने नागरिकों में राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया। गीतों की धुनें अलग-अलग रागों, तालों तथा लयों में निबद्ध हैं। प्रस्तुत गीतों में भारत वर्ष की सुंदरता समृद्धि, एकता, अखंडता, आदि का सुंदरता पूर्वक वर्णन किया गया है।

9.5 शब्दावली

- कहरवा: कहरवा आठ मात्रा की एक ताल है जो मुख्य रूप से तबला वाद्य पर बजाई जाती है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- मध्य लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय ना तो धीमी हो ना बहुत तेज गति में चले तो उसे मध्य लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

9.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर: घ)

9.2 उत्तर: ग)

9.3 उत्तर: ख)

9.4 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 2

9.5 उत्तर: घ)

9.6 उत्तर: ग)

9.7 उत्तर: ख)

9.8 उत्तर: क)

9.7 संदर्भ

https://parenting.firstcry.com/articles/10-most-popular-indian-patriotic-songs-for-children-with-lyrics/

शर्मा, डॉ. लोकेश. (2012). मधुर गीतांजली. कनिष्क पब्लिशर्ज, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

9.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. लोकेश. (2012). मधुर गीतांजली. कनिष्क पब्लिशर्ज, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2022). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 2. किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को स्वरलिपि में लिखिए।

प्रश्न 3. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को स्वरलिपि में लिखिए।

इकाई-10
भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
10.1	भूमिका
10.2	उद्देश्य तथा परिणाम
10.3	भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति
10.3.1	भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी का जीवन परिचय
10.3.2	भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति
	स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4	सारांश
10.5	शब्दावली
10.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.7	संदर्भ
10.8	अनुशंसित पठन
10.9	पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति (Power Point Presentation) को कैसे बनाते हैं यह प्रस्तुत किया गया है।

पावर प्वाइंट प्रस्तुति एक अत्यधिक प्रभावी माध्यम है जिसके द्वारा महान संगीतकारों के जीवन और योगदान को सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसका उपयोग शिक्षा और व्यावसायिक संदर्भों में जानकारी को समझाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जहां विचारों को स्पष्टता से और आकर्षकता से प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति या समूह अपने संदेश को साझा करते हैं और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख गायक भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी के जीवन, उनके कार्य, उनकी सांगीतिक यात्रा के विषय में पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन बनाने संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख संगीतकारों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के विषय में जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख संगीतकारों पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति बनाने संबंधी जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी को भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख संगीतकारों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी को भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख संगीतकारों पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति बनाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।

10.3 भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति

10.3.1 भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी का जीवन परिचय

भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी का जन्म 4 फरवरी, 1922 को कर्नाटक के धारवाड़ जिले के गडग गांव में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री गुरूनाथ जोशी संस्कृत के विद्वान थे और स्थानीय स्कूल में शिक्षक थे। उनकी मां गोदावरीबाई की मृत्यु बचपन में ही हो गई थी और पं.भीमसेन जोशी और उनके भाई-बहनों का पालन-पोषण उनकी मां ने किया। जोशी जी को बचपन से ही संगीत में असाधारण रुचि थी। ऐसा कहा जाता है कि वे हारमोनियम और तानपुरा से इतने मंत्रमुग्ध थे कि वे अपने शहर में संगीत मंडलियों (संगीत समूहों) के पीछे-पीछे चलते थे और उनके प्रदर्शन में खो जाते थे। कभी-कभी, अत्यधिक थकान के कारण, वे जहाँ भी जगह मिलती, सो जाते थे। अंत में, उनके पिता को उनकी शर्ट पर 'आचार्य जोशी का बेटा' लिखना पड़ा ताकि जो कोई भी उन्हें सोते हुए देखे, वे उन्हें वापस घर ले आएँ। वे पेशेवर रूप से गायन करना चाहते थे लेकिन उनके पिता चाहते थे कि उनका बेटा डॉक्टर या इंजीनियर बने। 1933 में, 11 वर्ष की आयु में, पं. जोशी संगीत सीखने के लिए गुरु की तलाश में घर से भाग गये।

उन्होंने ग्वालियर, लखनऊ और रामपुर में तीन साल बिताए, जहाँ उन्होंने अपनी आजीविका चलाने के लिए कई तरह के छोटे-मोटे काम किए। ग्वालियर में, वे प्रसिद्ध सरोद वादक हाफ़िज़ अली खान की मदद से ग्वालियर के महाराजा द्वारा संचालित माधव संगीत विद्यालय में प्रवेश पाने में सफल रहे। बाद में, उनकी मुलाकात रामपुर घराने के उस्ताद मुश्ताक हुसैन खान से हुई और वे उनके साथ एक साल से ज़्यादा समय तक रहे। उन्होंने कलाकारों के लिए घरेलू काम किए और बदले में उन्हें खाना और संगीत की ट्रेनिंग दी। इस दौरान, उनकी मुलाक़ात राजा भैया पूंछवाले, कृष्णराव पंडित, विश्वदेव चटर्जी और पंडित विनायकराव पटवर्धन जैसे कई महान संगीतकारों से हुई।

उनके पिता ने आखिरकार उन्हें जालंधर में ढूँढ़ निकाला और अपने बेटे के संगीत के प्रति अदम्य जुनून को महसूस करते हुए उसे घर ले आए। पं. जोशी ने 1936 में पंडित रामभान कुंदगोलकर, जिन्हें सवाई गंधर्व के नाम से जाना जाता है, से हिंदुस्तानी संगीत की औपचारिक शिक्षा प्राप्त की और 1940 तक इसे जारी रखा। पं. जोशी ने 1941 में 19 वर्ष की

आयु में अपना पहला संगीत का प्रदर्शन किया था। मराठी और हिंदी में भक्ति गीतों से युक्त उनका पहला एल्बम 1942 में हिज मास्टर्स वॉयस (HMV) द्वारा जारी किया गया था। अगले वर्ष, वे एक रेडियो कलाकार के रूप में काम करने के लिए मुंबई चले गए और जल्द ही ख्याल गायन के रूप में पहचान बनाई और नाट्य संगीत, भजन और ठुमरी में भी समान रूप से निपुण थे। हालाँकि उन्होंने मुख्य रूप से किराना घराने की गायकी में गाया, लेकिन उन्होंने जयपुर-अतरौली, आगरा और पटियाला जैसे अन्य घरानों को एक अनोखे तरीके से कुशलतापूर्वक मिश्रित किया। उनके कुछ लोकप्रिय रागों में 'शुद्ध कल्याण', 'मियां की तोड़ी', 'पूरिया धनाश्री', 'मुल्तानी', 'भीमपलासी', 'दरबारी', 'मालकौंस', 'अभोगी', 'ललित', 'यमन', 'असावरी तोड़ी', 'मियां की मल्हार' और 'रामकली' शामिल हैं।

पं. जोशी ने कई फीचर फिल्मों के लिए पार्श्व गायक के रूप में अपनी आवाज़ दी, जिसमें कन्नड़ फिल्म संध्या राग (1966) के लिए लोकप्रिय गीत 'राम्या ही स्वर्गुन लंका' भी शामिल है। उन्होंने मराठी फिल्म स्वयंवर जाले सितेचे (1964) के लिए मन्ना डे, 'ई परिया सोबागु' गीत के लिए कर्नाटक गायक एम. बालामुरलीकृष्ण और फिल्म बीरबल माई ब्रदर (1973) के लिए पंडित जसराज जैसे प्रसिद्ध कलाकारों के साथ काम किया। हिंदी फिल्म अनकही (1985) में उनके प्रदर्शन ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ पुरुष पार्श्वगायक का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार दिलाया। जोशी को 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' संगीत वीडियो (1988) में उनके प्रदर्शन के लिए भी व्यापक लोकप्रियता मिली, जिसे उन्होंने राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए तत्कालीन प्रधान मंत्री राजीव गांधी के कहने पर बनाया था। वह भारतीय गणतंत्र के 50वें वर्ष के अवसर पर संगीत निर्देशक ए.आर. रहमान द्वारा निर्मित 'जन गण मन' का भी हिस्सा थे।

आर्य संगीत प्रसारक मंडल के साथ जोशी और उनके मित्र पंडित वसंतराव देशपांडे ने 1953 में सवाई गंधर्व की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में पुणे में सवाई गंधर्व संगीत महोत्सव नामक पहला सवाई गंधर्व संगीत समारोह आयोजित किया था। तब से यह महोत्सव हर साल आयोजित किया जाता है। पं. जोशी जी 1953 से 2002 में अपनी सेवानिवृत्ति तक इस महोत्सव से निकटता से जुड़े रहे और व्यक्तिगत रूप से चयनित कलाकारों को निमंत्रण भेजते रहे।

पंडित भीमसेन जोशी ने अपने काम के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते हैं, जिनमें 1972 में पद्म श्री, 1972 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 1985 में पद्म भूषण, 1999 में पद्म विभूषण, 2002 में महाराष्ट्र भूषण, 2005 में कर्नाटक रत्न और 2008 में भारत रत्न, भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार शामिल हैं। 31 दिसंबर, 2010

को जोशी को गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल ब्लीडिंग और द्विपक्षीय निमोनिया के कारण पुणे के सह्याद्री सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। 24 जनवरी, 2011 को उनका निधन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद, सवाई गंधर्व संगीत महोत्सव का नाम बदलकर सवाई गंधर्व पं.भीमसेन महोत्सव कर दिया गया। ऐसा माना जाता है कि पंडित पं.भीमसेन जोशी के अनगिनत शागिर्द हैं माधव गुडी, नारायण देशपांडे, श्रीकांत देशपांडे, श्रीनिवास जोशी और आनंद भाटे उनके कुछ प्रमुख शिष्य हैं, जिन्हें उनके अधीन कठोर प्रशिक्षण प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

10.3.2 भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति

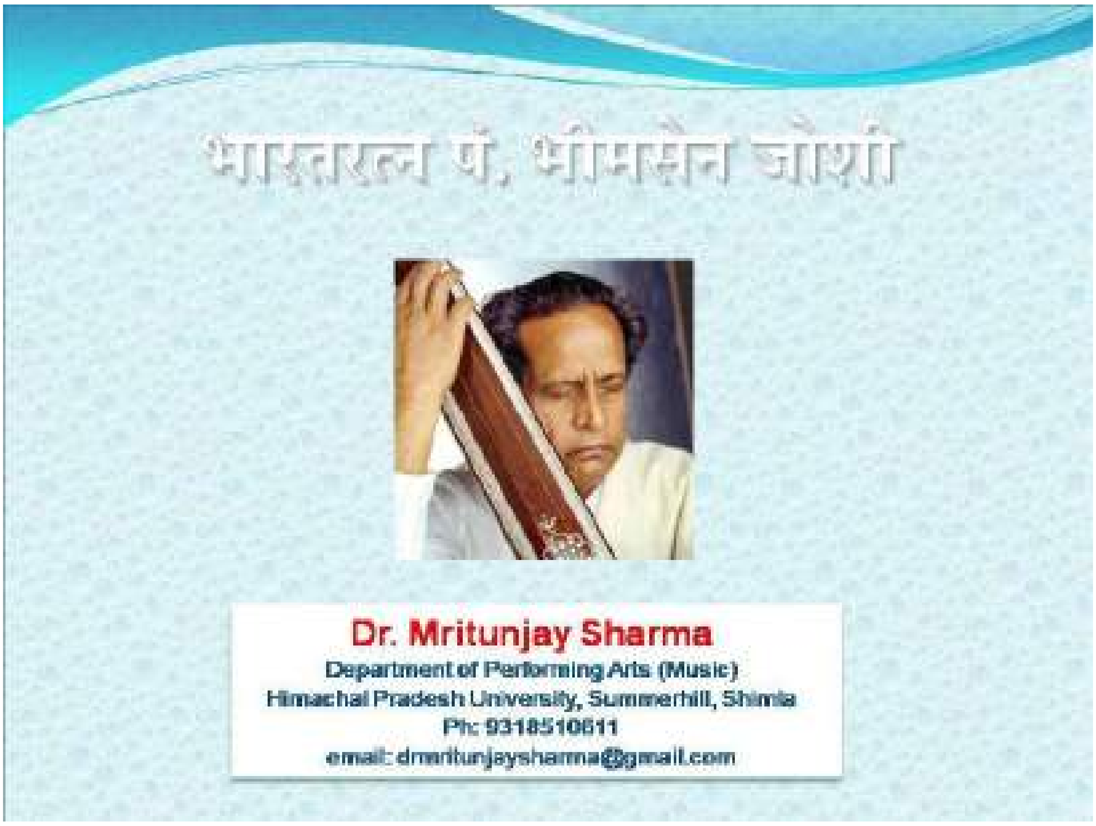

भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी

- भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी का जन्म 4 फरवरी, 1922 को कर्नाटक के धारवाड़ जिले के गडग गांव में ब्राह्मण परिवार में हुआ था।
- उनके पिता श्री गुरूनाथ जोशी थे।
- उनकी मां गोदावरीबाई थी।

भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी

- 1933 में, 11 वर्ष की आयु में, पं. भीमसेन जोशी संगीत सीखने के लिए गुरु की तलाश में घर से भाग गये।
- प्रसिद्ध सरोद वादक हाफ़िज़ अली खान की मदद से वे माधव संगीत विद्यालय में प्रवेश पाने में सफल रहे।

भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी

- 1936 में पंडित रामभान कुंदगोलकर, जिन्हें सवाई गंधर्व के नाम से जाना जाता है, से हिंदुस्तानी संगीत की औपचारिक शिक्षा प्राप्त की और 1940 तक इसे जारी रखा।
- पं. जोशी ने 1941 में 19 वर्ष की आयु में अपना पहला संगीत का प्रदर्शन किया था।

भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी

- मराठी और हिंदी में भक्ति गीतों से युक्त उनका पहला एल्बम 1942 में हिज मास्टर्स वॉयस (HMV) द्वारा जारी किया गया था।
- उन्होंने मुख्य रूप से किराना घराने की गायकी को ही गाया।

भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी

उनके कुछ लोकप्रिय राग निम्न हैं:

- शुद्ध कल्याण
- पूरिया धनाश्री
- भीमपलासी
- मालकौंस
- ललित
- आसावरी
- मियां की मल्हार

मियां की तोड़ी
मुल्तानी
दरबारी
अभोगी
यमन
तोड़ी
रामकली

भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी

पं. जोशी ने कई फिल्मों के लिए पार्श्व गायक के रूप में अपनी आवाज़ दी,

- कन्नड़ फिल्म संध्या राग (1966) के लिए लोकप्रिय गीत 'राम्या ही स्वर्गुन लंका'
- मराठी फिल्म स्वयंवर जाले सितेचे (1964) के लिए मन्ना डे,
- 'ई परिया सोबागु' गीत के लिए कर्नाटक गायक एम. बालामुरलीकृष्ण
- फिल्म बीरबल माई ब्रदर (1973) के लिए पंडित जसराज जैसे प्रसिद्ध कलाकारों के साथ काम किया।

भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी

- हिंदी फिल्म अनकही (1985) के लिए सर्वश्रेष्ठ पुरुष पार्श्वगायक का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला।
- 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' संगीत वीडियो (1988) में उनके प्रदर्शन के लिए भी व्यापक लोकप्रियता मिली

भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी

- आर्य संगीत प्रसारक मंडल के साथ जोशी और उनके मित्र पंडित वसंतराव देशपांडे ने 1953 में सवाई गंधर्व की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में पुणे में सवाई गंधर्व संगीत महोत्सव नामक पहला सवाई गंधर्व संगीत समारोह आयोजित किया था।

भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी
पं.भीमसेन जोशी ने अपने काम के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते हैं
1972 में पद्म श्री
1972 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार
1985 में पद्म भूषण
1999 में पद्म विभूषण
2002 में महाराष्ट्र भूषण
2005 में कर्नाटक रत्न
2008 में भारत रत्न

भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी
पंडित पं.भीमसेन जोशी के अनगिनत शागिर्द हैं जिनमें
माधव गुडी
नारायण देशपांडे
श्रीकांत देशपांडे
श्रीनिवास जोशी
आनंद भाटे उनके कुछ प्रमुख शिष्य हैं

भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी

- 24 जनवरी, 2011 को उनका निधन हो गया।
- उनकी मृत्यु के बाद, सवाई गंधर्व संगीत महोत्सव का नाम बदलकर सवाई गंधर्व पं.भीमसेन महोत्सव कर दिया गया।

धन्यवाद

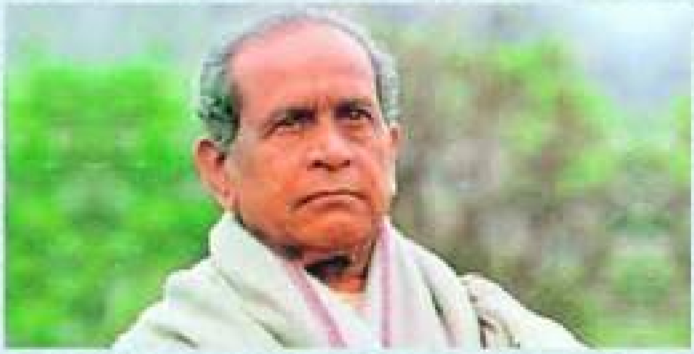

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 पंडित पं.भीमसेन जोशी का जन्म कब हुआ?

1) 4 फरवरी 1923

2) 4 फरवरी 1932

3) 4 फरवरी 1921

4) 4 फरवरी 1922

10.2 पंडित पं.भीमसेन जोशी के गुरु का नाम क्या था?

1) गोपाल नायक

2) स्वामी हरीदास

3) पं० सवाई गांधर्व

4) सभी

10.3 पंडित पं.भीमसेन जोशी किस घराने से संबंध रखते हैं?

1) मेवाड़

2) किराना

3) दिल्ली

4) ग्वालियर

10.4 पंडित पं.भीमसेन जोशी को पद्मश्री कब मिला?

1) 1972

2) 1982

3) 1992

4) 1962

10.5 पंडित पं.भीमसेन जोशी को पद्मभूषण कब मिला?

1) 2001

2) 2004

3) 1999

4) 1985

10.6 पंडित पं.भीमसेन जोशी को भरत रत्न पुरस्कार कब मिला?

1) 2007

2) 2004

3) 2008

4) 1998

10.7 पंडित पं.भीमसेन जोशी का देहांत कब हुआ?

1) 24 जनवरी 2012

2) 24 जनवरी 2011

3) 24 जनवरी 2010

4) 24 मार्च 2011

10.4 सारांश

पावर प्वाइंट प्रस्तुति एक अत्यधिक प्रभावी माध्यम है जिसके द्वारा महान संगीतकारों के जीवन और योगदान को सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसका उपयोग शिक्षा और व्यावसायिक संदर्भों में जानकारी को समझाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जहां विचारों को स्पष्टता से और आकर्षकता से प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति या समूह अपने संदेश को साझा करते हैं और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं।

10.5 शब्दावली

- टेक्स्ट (Text): स्लाइड पर प्रस्तुत जानकारी या मुख्य बिंदु को लिखित रूप में प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त पाठ।

- प्रस्तुति (Presentation): जब कोई व्यक्ति या समूह अपने विचारों, जानकारी या अनुसंधान को सामर्थ्यपूर्ण रूप से स्लाइड्स के माध्यम से दूसरों के सामने प्रस्तुत करता है।
- स्लाइड (Slide): पावर प्वाइंट प्रस्तुति का मुख्य भाग जिसमें विचार, जानकारी या डेटा को ग्राफ़िक्स, पाठ, और अन्य साधनों के साथ साजा जाता है।

10.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: 4)

10.2 उत्तर: 3)

10.3 उत्तर: 2)

10.4 उत्तर: 1)

10.5 उत्तर: 4)

10.6 उत्तर: 3)

10.7 उत्तर: 2)

10.7 संदर्भ

https://mysticamusic.com/artists/pandit-bhimsen-joshi-vocalist

https://www.thehindu.com/entertainment/music/pt-bhimsen-joshi-the-making-of-a-maestro/article37446411.ece

https://www.thehindu.com/news/national/karnataka/pandit-bhimsen-joshi-from-a-small-town-boy-to-bharat-ratna/article38370340.ece

https://journalsofindia.com/pandit-bhimsen-gururaj-joshi/

माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन. (2022). पावर प्वाइंट [कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर]. पुनः प्राप्त किया गया from https://www.microsoft.com/powerpoint

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.8 अनुशंसित पठन

माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन. (2022). पावर प्वाइंट [कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर]. पुनः प्राप्त किया गया from https://www.microsoft.com/powerpoint

https://mysticamusic.com/artists/pandit-bhimsen-joshi-vocalist

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

10.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख संगीतकार भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी के जीवन पर एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति प्रस्तुत करें

प्रश्न 2. भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख संगीतकार भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी के योगदान पर एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति प्रस्तुत करें

इकाई-11
भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्य तथा परिणाम
11.3	भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति
11.3.1	भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर का जीवन परिचय
11.3.2	भारतरत्न पं सुश्री लता मंगेशकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति
	स्वयं जांच अभ्यास 1
11.4	सारांश
11.5	शब्दावली
11.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.7	संदर्भ
11.8	अनुशंसित पठन
11.9	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति (Power Point Presentation) को कैसे बनाते हैं यह प्रस्तुत किया गया है।

पावर प्वाइंट प्रस्तुति एक अत्यधिक प्रभावी माध्यम है जिसके द्वारा महान संगीतकारों के जीवन और योगदान को सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसका उपयोग शिक्षा और व्यावसायिक संदर्भों में जानकारी को समझाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जहां विचारों को स्पष्टता से और आकर्षकता से प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति या समूह अपने संदेश को साझा करते हैं और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भारत के संगीत की प्रमुख गायिका भारत रत्न सुश्री लता मंगेशकर के जीवन, उनके कार्य, उनकी सांगीतिक यात्रा के विषय में पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन बनाने संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को भारत के संगीत की प्रमुख गायिका भारत रत्न सुश्री लता मंगेशकर के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के विषय में जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को भारत के संगीत की प्रमुख गायिका भारत रत्न सुश्री लता मंगेशकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति बनाने संबंधी जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी को भारत के संगीत की प्रमुख गायिका भारत रत्न सुश्री लता मंगेशकर के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के विषय में जान पाएगा।

- विद्यार्थी को भारत के संगीत की प्रमुख गायिका भारत रत्न सुश्री लता मंगेशकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति बनाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।

11.3 भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति

11.3.1 भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर का जीवन परिचय

भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर का जन्म 28 सितम्बर 1929 को इन्दौर में हुआ। इनके पिता जी का नाम दीना नाथ मंगेशकर था। लता जी ने 13 वर्ष की आयु में सन् 1945 में बम्बई जिसे आज मुम्बई के नाम से जाना जाता है की ओर मुंह घुमाया। इन्होंने उस्ताद अमानत अली खॉ भिन्डी बाज़ार वाले से संगीत की शिक्षा ली, लेकिन भारत-पाक विभाजन के समय खाँ साहिब पाकिस्तान चले गए। इसके पश्चात् लता जी ने अमानत खाँ देवास वालों से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। पं० तुलसी दास शर्मा और उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ जैसे जाने-माने कलाकारों से संगीत सीखा। लता जी ने जिस समय हिन्दी फिल्मों में गायकी की शुरूआत की उस दौरान नूरजहाँ, शमशाद बेगम और जोहरा बाई अम्बाले वाली आदि गायिकाएं अपनी गायकी में दूर-दूर तक प्रचलित थीं। सन् 1947 में शहीद फिल्म के लिए गुलाम हैदर ने लता जी को अवसर देना चाहा, लेकिन निर्माता शशीधर मुखर्जी ने पतली आवाज़ कह कर नकार दिया। उस समय गुलाम हैदर ने कहा था कि एक दिन हिन्दी फिल्मों के निर्माता-निर्देशक लता के पास जाकर अपनी फिल्मों में गीत गाने की भीख मांगेंगे।

सन् 1949 में महल फिल्म में गाया गीत आएगा, आएगा, आएगा आने वाला, ने लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। भारतीय शास्त्रीय संगीत के जाने-माने गायक स्व० उस्ताद अमीर खाँ ने लता जी के बारे में कहा था, "हमने बरसों रियाज़ किया, जो बात हम तीन घण्टे में करते हैं, ये लडकी तीन मिनट में कर देती है"। इतनी बड़ी बात इतने बड़े गायक ने जिस सहजता से कही है बिना एक पल सोचे यही बात आज प्रत्येक व्यक्ति के मुख से ही नहीं अपितु दिल से निकल रही है। लता जैसी गायिका युग में एक ही पैदा होती है, लगता है कि जैसे संगीत की आत्मा उसकी वाणी में समा गई हो।

लता जी भारत की एक अमूल्य निधि हैं। लोग कहते हैं कि लता जी महाराष्ट्र की हैं, लेकिन यह बात पूरी तरह गलत है, क्योंकि पंजाबी कहते हैं कि ये पंजाबन हैं। इससे यह पता चलता है कि प्रत्येक भारतीय इन्हें अपनी मान लेता है, क्योंकि लता जी ने प्रत्येक भाषा और वर्ग के लिए गीत गाए हैं। जिस भाषा को भी लता जी ने अपनी वाणी दी है, वह उसी की हो गई। भाषा के साथ-साथ लता में भावों को भी सांगीतिक सार्थकता प्रदान करने की एक अनोखी क्षमता है, जिसको व्यक्त करने के लिए भाषा भी कई बार असमर्थ हो जाती है। इनके स्वरों में प्रत्येक शब्द पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

लता जी ने सर्वप्रथम जो गीत गाया वह बसन्त जोगलेकर की हिन्दी फिल्म 'आप की सेवा में गाया, जिसके संगीतकार दत्ता डावजेकर थे। यह लता का प्रथम गीत था। उस समय उनके पारिवारिक हालात ठीक नहीं थे, घर की ज़िम्मेदारियों के कारण संकट के बादल छाए हुए थे। धीरे-धीरे समय ने करवट ली और इनकी आवाज़ का जादू चारों ओ फैलने लगा। संगीत निर्देशक नौशाद ने ऐसे अंदाज़ में फिल्मी गीत गवाए तथा खेम चन्द प्रकाश की महल और शंकर जयकिशन की बरसात के साथ लता जी दुनिया में आफताब की तरह चमकने लगीं।

लता जी का कहना है कि उन्हें इस मुकाम तक आने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ी है। उस ज़माने में बहुत सख़्त मेहनत होती थी। उस समय ऑरकेस्ट्रा इतना आधुनिक नहीं था। उस समय अच्छे रिकार्डिंग कक्ष भी नहीं थे। जितनी मेहनत उस समय की जाती थी उतना उसका मेहनताना भी नहीं मिलता था। लता जी का कहना है कि मैं गीत की रिकॉर्डिंग से पूर्व संगीतकार की बनाई हुई धुन को टेप कर लेती हूँ, फिर लिखे हुए गीत के शब्दों के साथ टेप और धुन के साथ अभ्यास करती हूँ, इसके पश्चात् मुझे गीत गाने में कोई अड़चन नहीं आती। आज भी गायक कलाकारों को फिल्मी सितारों से कम ही मेहनताना मिलता है।

जब की गायक का भी फिल्म में एक बड़ा योगदान होता है। इनका कहना है कि आज भी हमारे देश में पुराने संगीतकारों की तरह अच्छे-अच्छे संगीतकार विद्यमान हैं और अच्छी-अच्छी स्वर रचनाएँ भी सुनने को मिलती है।

लता जी का कहना है कि वे सफलता के ऊपर वाले बिन्दु पर उस ज़माने में पहुँची हैं, परन्तु ईमानदारी की बात यह है कि उस समय को कला के रूप में अपनाया जाता था, लेकिन अब संगीत केवल एक व्यवसाय बन कर रह गया है। पहले

का संगीत आज भी उतना ही प्रचलित है जबकि आज के संगीतकारों में केवल यही दोष है कि आज के संगीतकार उबाल की तरह उठते हैं और जल्दी ही बैठ जाते हैं।

लता जी का आरम्भिक जीवन बेफिक्री से गुज़रा। लता जी के घर में छोटी तीन बहनें और एक भाई है। लता जी संगीत को ही अपनी पूंजी मानती है। इनके पिता जी नहीं चाहते थे कि लता फिल्मों में गाए। सन् 1942 में लता जी ने प्रथम गीत कीर्ति हसाल नामक मराठी फिल्म में गाया, परन्तु पिता दीनानाथ ने वह गीत फिल्म से निकलवा दिया। लता जी की गायकी सदैव नई रही है। इन्होंने 65 वर्ष की आयु में एक गीत गाया था, 'दीदी तेरा देवर दिवाना जो बहुत प्रसिद्ध हुआ। लता जी के जन्म के समय इनका नाम हृदयका रखा गया, लेकिन बाद में इनके पिता जी ने एक नाटक देखा जिसमें लतिका नामक किरदार थी, उससे प्रेरित होकर इनका नाम लता रखा गया।

इनका समस्त परिवार संगीत से जुड़ा हुआ है। इनकी छोटी बहनें आशा भोंसले, उषा मंगेशकर, मीना मंगेशकर और भाई हृदय नाथ मंगेशकर भी गायन में अत्यन्त निपुण कलाकार हैं। आप की सुरीली आवाज़ को उस्ताद अमानत अली खाँ भिन्डी बाज़ार वाले, अमानत अली देवास वाले, पं० तुलसी दास शर्मा और गुलाम मुहम्मद आदि ने निखारा। लता जी ने सन् 1960 के दशक में बैजूबांवरा, मुगलेआज़म, कोहीनूर, आग, श्री 420, मधुमती जैसी फिल्मों में बहुत से यादगार गीत गाए। इसके अतिरिक्त 1970 के दशक में पाकीज़ा, शर्मीली, अभिमान जैसी यादगार फिल्मों के गीत गा कर अपने चाहने वालों के दिल में एक अमिट छाप छोड़ दी। इसके अतिरिक्त 1980 के आर दशक में चाँदनी, लम्हें, लेकिन, डर, हीर रांझा, दिल वाले दुल्हनिया ले जाऐंगे अपनी आदि फिल्मों के गीत गाए।

तब से लेकर आज तक ये अपने मधुर कंठ, व सुरीले गीतों से सभी के दिलों में बस बस गई हैं। फिल्मी गीतों के अतिरिक्त इन्होंने असंख्य गैर फिल्मी गीत भी गाए। इस प्रकार इनके द्वारा गाए गए गीतों की सूची बहुत अधिक लम्बी है। लता जी के प्रेरणा स्त्रोत के० एल० सहगल थे।

इन्हें इनके पूरे गायन जीवन में बहुत से पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया गया है। 1969 में पद्म भूषण, 1989 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार, 1999 में पद्म विभूषण, 2001 में सर्वोच्च सम्मान 'भारतरत्न' मुख्य हैं। आज स्वरों की मल्लिका लता मंगेशकर का गायन जीवन लगभग पिछले सात दशकों से निरन्तर चला आ रहा है, जिसकी शुरूआत

सन् 1942 में में हुई थी। बॉलीवुड की 1000 से अधिक फिल्मों और बीस से अधिक भारतीय भाषाओं के गीतों में अपनी आवाज़ दे चुकी 'भारतरत्न लता मंगेशकर की आवाज का जादू आज भी कायम है और सदा रहेगा। संगीत जगत का ये चमकता सितारा इस भौतिक जगत से 6 फरबरी 2022 को अस्त हो गया।

11.3.2 भारतरत्न पं.भीमसेन जोशी पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति

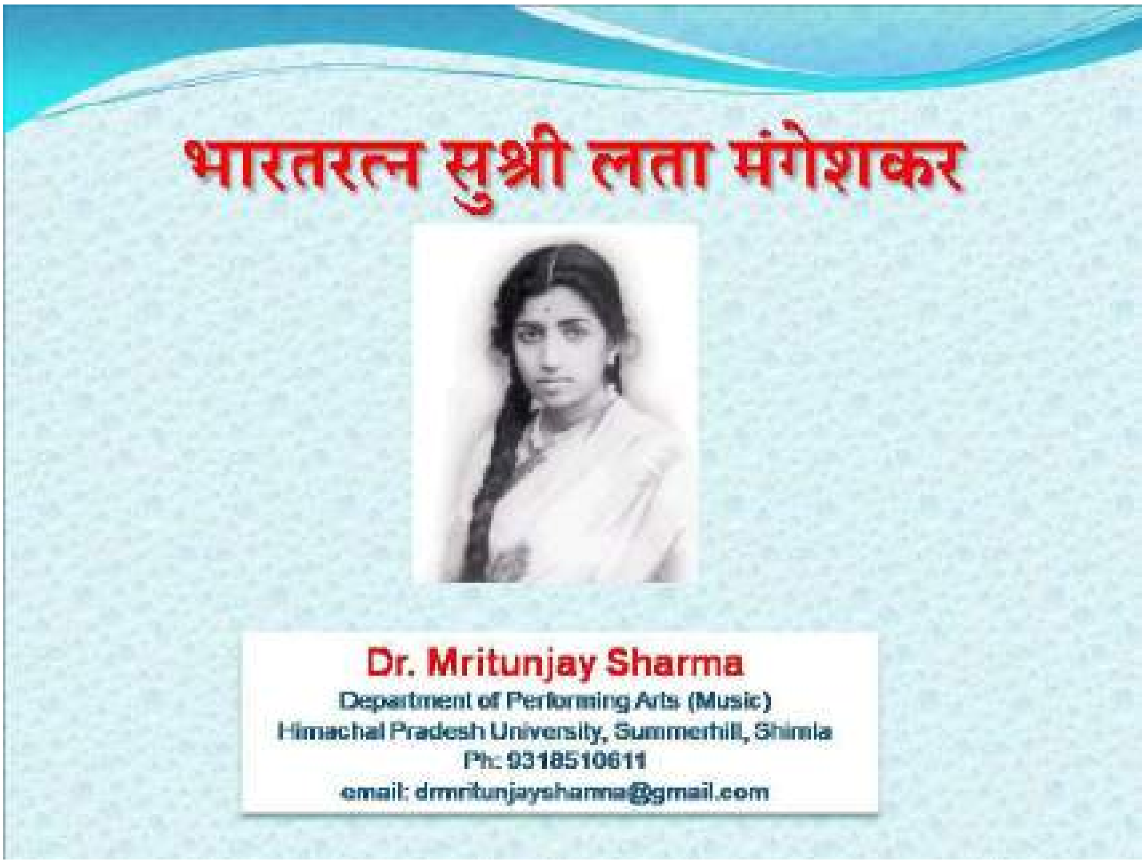

भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर

- भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर का जन्म 28 सितम्बर सन् 1929 को इन्दौर में हुआ।
- उनके पिता श्री दीना नाथ मंगेशकर थे।
- इनकी छोटी बहनें आशा भोंसले, उषा मंगेशकर, मीना मंगेशकर और भाई हृदय नाथ मंगेशकर हैं

भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर

- इन्होंने उस्ताद अमानत अली खॉ (भिन्डी बाज़ार वाले) से संगीत की शिक्षा ली।

- इसके पश्चात् लता जी ने अमानत खाँ (देवास वालों) से संगीत की शिक्षा प्राप्त की।

भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर

- पं० तुलसी दास शर्मा और उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ जैसे जाने-माने कलाकारों से संगीत सीखा।
- सन् 1949 में 'महल' फिल्म में गाया गीत 'आएगा, आएगा, आएगा आने वाला' गाया।

भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर

- लता जी ने सर्वप्रथम जो गीत गाया वह बसन्त जोगलेकर की हिन्दी फिल्म 'आप की सेवा में गाया, जिसके संगीतकार दत्ता डावजेकर थे।
- संगीत निर्देशक नौशाद ने 'ऐसे अंदाज़' में फिल्मी गीत गवाए, खेम चन्द प्रकाश की 'महल' और शंकर जयकिशन की 'बरसात' के साथ लता जी दुनिया में आफताब की तरह चमकने लगीं।

भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर

- लता जी ने सन् 1960 के दशक में बैजूबांवरा, मुगलेआज़म, कोहीनूर, आग, श्री 420, मधुमती जैसी फिल्मों में बहुत से यादगार गीत गाए।
- 1970 के दशक में पाकीज़ा, शर्मीली, अभिमान जैसी यादगार फिल्मों के गीत गा कर अपने चाहने वालों के दिल में एक अमिट छाप छोड़ दी।

भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर

1980 के आर दशक में चाँदनी, लम्हें, लेकिन, डर, हीर रांझा, दिल वाले दुल्हनिया ले जाऐंगे अपनी आदि फिल्मों के गीत गाए।

भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर
बॉलीवुड की 1000 से अधिक फिल्मों और 20 से अधिक भारतीय भाषाओं के गीतों में अपनी आवाज़ दे चुकी हैं।

भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर
6 फरवरी 2022 को उनका निधन हो गया।

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर का जन्म कब हुआ?

1) 4 फरवरी 1923

2) 28 सितम्बर 1928

3) 4 फरवरी 1921

4) 28 सितम्बर 1929

11.2 भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर के गुरु का नाम क्या था?

1) गोपाल नायक

2) स्वामी हरीदास

3) उस्ताद अमानत अली खॉ

4) सभी

11.3 भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर किस घराने से संबंध रखते हैं?

1) मेवाड़

2) भिन्डी बाज़ार

3) दिल्ली

4) ग्वालियर

11.4 भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर को दादा साहब फाल्के पुरस्कार कब मिला?

1) 1989

2) 1982

3) 1992

4) 1962

11.5 भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर को पद्मभूषण कब मिला?

1) 2001

2) 1987

3) 1999

4) 1969

11.6 भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर को भरत रत्न पुरस्कार कब मिला?

1) 2007

2) 2004

3) 2001

4) 1998

11.7 भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर का देहांत कब हुआ?

1) 8 फरबरी 2022

2) 6 फरबरी 2022

3) 24 जनवरी 2021

4) 24 मार्च 2019

11.4 सारांश

पावर प्वाइंट प्रस्तुति एक अत्यधिक प्रभावी माध्यम है जिसके द्वारा महान संगीतकारों के जीवन और योगदान को सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसका उपयोग शिक्षा और व्यावसायिक संदर्भों में जानकारी को समझाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जहां विचारों को स्पष्टता से और आकर्षकता से प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति या समूह अपने संदेश को साझा करते हैं और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं।

11.5 शब्दावली

- टेक्स्ट (Text): स्लाइड पर प्रस्तुत जानकारी या मुख्य बिंदु को लिखित रूप में प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त पाठ।
- प्रस्तुति (Presentation): जब कोई व्यक्ति या समूह अपने विचारों, जानकारी या अनुसंधान को सामर्थ्यपूर्ण रूप से स्लाइड्स के माध्यम से दूसरों के सामने प्रस्तुत करता है।
- स्लाइड (Slide): पावर प्वाइंट प्रस्तुति का मुख्य भाग जिसमें विचार, जानकारी या डेटा को ग्राफ़िक्स, पाठ, और अन्य साधनों के साथ साजा जाता है।

11.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर: 4)

11.2 उत्तर: 3)

11.3 उत्तर: 2)

11.4 उत्तर: 1)

11.5 उत्तर: 4)

11.6 उत्तर: 3)

11.7 उत्तर: 2)

11.7 संदर्भ

https://lataonline.com/biography

https://www.safalta.com/current-affairs/lata-mangeshkar-biography-in-hindi

माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन. (2022). पावर प्वाइंट [कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर]. पुनः प्राप्त किया गया from https://www.microsoft.com/powerpoint

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

11.8 अनुशंसित पठन

https://lataonline.com/biography

माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन. (2022). पावर प्वाइंट [कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर]. पुनः प्राप्त किया गया from https://www.microsoft.com/powerpoint

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

11.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के संगीत की प्रमुख भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर के जीवन पर एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति प्रस्तुत करें

प्रश्न 2. भारत के संगीत की प्रमुख भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर के योगदान पर एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति प्रस्तुत करें।

इकाई-12
भारतरत्न पं. रवि शंकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
12.1	भूमिका
12.2	उद्देश्य तथा परिणाम
12.3	भारतरत्न पं. रवि शंकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति
12.3.1	भारतरत्न पं. रवि शंकर का जीवन परिचय
12.3.2	भारतरत्न पं. रवि शंकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति
	स्वयं जांच अभ्यास 1
12.4	सारांश
12.5	शब्दावली
12.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.7	संदर्भ
12.8	अनुशंसित पठन
12.9	पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में भारतरत्न पं. रवि शंकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति (Power Point Presentation) को कैसे बनाते हैं यह प्रस्तुत किया गया है।

पावर प्वाइंट प्रस्तुति एक अत्यधिक प्रभावी माध्यम है जिसके द्वारा महान संगीतकारों के जीवन और योगदान को सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसका उपयोग शिक्षा और व्यावसायिक संदर्भों में जानकारी को समझाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जहां विचारों को स्पष्टता से और आकर्षकता से प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति या समूह अपने संदेश को साझा करते हैं और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख गायक भारत रत्न पंडित रवि शंकर के जीवन, उनके कार्य, उनकी सांगीतिक यात्रा के विषय में पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन बनाने संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- विद्यार्थी को भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख संगीतकारों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के विषय में जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी को भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख संगीतकारों पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति बनाने संबंधी जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी को भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख संगीतकारों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी को भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख संगीतकारों पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति बनाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।

12.3 भारतरत्न पं. रवि शंकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति

12.3.1 भारतरत्न पं. रवि शंकर का जीवन परिचय

नाम: पं. रवि शंकर

जन्म तिथि: 7 अप्रैल, 1920

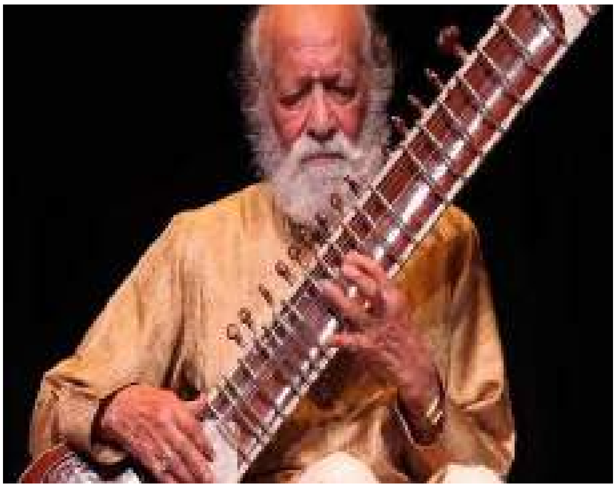

जन्म स्थान: वाराणसी

जन्म नाम: रवींद्र शंकर चौधरी

पिता: श्याम शंकर चौधरी

माता: हेमांगिनी देवी

मृत्यु तिथि: 11 दिसंबर 2012

मृत्यु स्थान: सैन डिएगो, कैलिफोर्निया

पेशा: सितार वादक, संगीतकार, गायक

जीवनसाथी: अन्नपूर्णा देवी, सुकन्या राजन

बच्चे: शुभेंद्र शंकर, अनुष्का शंकर

भाई-बहन: उदय शंकर, राजेंद्र शंकर, देबेंद्र शंकर, भूपेंद्र शंकर

पुरस्कार: भारत रत्न, पद्म विभूषण, पद्म भूषण, ग्रैमी पुरस्कार आदि

पंडित रविशंकर एक भारतीय संगीतकार और संगीतकार थे, जिन्हें भारतीय शास्त्रीय वाद्य यंत्र सितार को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाने के लिए जाना जाता है। पंडित रविशंकर संगीत का अध्ययन करते हुए बड़े हुए और अपने भाई की नृत्य मंडली के सदस्य के रूप में दौरा किया। ऑल इंडिया रेडियो के निदेशक के रूप में सेवा करने के बाद, उन्होंने भारत और

संयुक्त राज्य अमेरिका का दौरा करना शुरू कर दिया। इस प्रक्रिया में, उन्होंने जॉर्ज हैरिसन और फिलिप ग्लास सहित कई उल्लेखनीय संगीतकारों के साथ सहयोग किया। उन्होंने प्रसिद्ध बैंड 'द बीटल्स' के साथ भी सहयोग किया, जिससे सितार को काफी हद तक लोकप्रिय बनाया गया। तीन सर्वोच्च भारतीय नागरिक पुरस्कारों से सम्मानित, पंडित रविशंकर का दिसंबर 2012 में कैलिफोर्निया में 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

बचपन

पं. रवि शंकर का जन्म एक बंगाली परिवार में हुआ था। उनके पिता श्याम शंकर चौधरी ब्रिटिश शासन में स्थानीय बैरिस्टर के रूप में सेवा करने के बाद वकील के रूप में काम करने के लिए लंदन चले गए थे। युवा रविशंकर का पालन-पोषण उनकी माँ ने किया और वे आठ साल की उम्र तक अपने पिता से नहीं मिले थे। 1930 में, वे एक संगीत मंडली का हिस्सा बनने के लिए पेरिस चले गए और बाद में अपने भाई उदय शंकर की नृत्य मंडली में शामिल हो गए। उन्होंने 10 साल की उम्र से ही मंडली के साथ दौरा किया और एक नर्तक के रूप में कई यादगार प्रस्तुतियाँ दीं।

रविशंकर और सितार

रविशंकर को सितार से बहुत बाद में परिचय हुआ जब वे 18 साल के थे। यह सब कोलकता में एक संगीत समारोह में शुरू हुआ जहाँ उन्होंने अमिय कांति भट्टाचार्य को शास्त्रीय वाद्य बजाते हुए सुना। प्रदर्शन से प्रभावित होकर, शंकर ने फैसला किया कि उन्हें भी भट्टाचार्य के गुरु, उस्ताद इनायत खान से सितार सीखना चाहिए। बाद में उस्ताद अल्लाऊद्दीन खाँ से सितार सीखा और इस तरह सितार उनके जीवन में आया और उनके अंतिम सांस तक उनके साथ रहा। उनके गुरु गुरु उस्ताद अलाउद्दीन खान थे, जिन्हें वे बाबा (शाब्दिक अर्थ में पिता) कहते थे। रविशंकर ने

बाबा को पहली बार 1934 में कलकत्ता में देखा था, जब वे 14 साल के थे। 1938 में संगीत के प्रति गहरी रुचि महसूस करने के बाद शंकर उस्ताद अलाउद्दीन खान के शिष्य बन गए।

प्रारंभिक कैरियर और आकाशवाणी से जुड़ाव

बाद वे मुंबई चले गए, जहाँ उन्होंने इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन के लिए काम किया। वहाँ उन्होंने 1946 तक बैले के लिए संगीत रचना शुरू की। इसके बाद वे नई दिल्ली रेडियो स्टेशन ऑल इंडिया रेडियो (AIR) के निदेशक बन गए, इस पद पर वे 1956 तक रहे। आकाशवाणी में अपने कार्यकाल के दौरान, शंकर ने ऑर्केस्ट्रा के लिए ऐसे संगीत की रचना की जिसमें सितार और अन्य भारतीय वाद्ययंत्रों को शास्त्रीय पश्चिमी वाद्यों के साथ मिलाया गया। इसी अवधि के दौरान, उन्होंने अमेरिकी मूल के वायलिन वादक येहुदी मेनुहिन के साथ संगीत का प्रदर्शन और लेखन शुरू किया।

रविशंकर के नाम एल्बमों की एक लंबी सूची है। उनके कुछ सबसे ज़्यादा बिकने वाले एल्बम इस प्रकार हैं:

- श्री रागाज़ - वर्ष 1956 में रिलीज़ हुआ, 'श्री रागाज़' उनका पहला एलपी एल्बम था। इसे वर्ष 2000 में एंजेल रिकॉर्ड्स द्वारा डिजिटल प्रारूप में फिर से रिलीज़ किया गया था।
- ताना माना - इस एल्बम का श्रेय मूल रूप से 'द रविशंकर प्रोजेक्ट' को दिया गया था और इसे 1987 में रिलीज़ किया गया था। 'ताना मन' पंडित द्वारा एक प्रयोगात्मक काम था, जिन्होंने 80 के दशक के इलेक्ट्रॉनिक संगीत के साथ पारंपरिक वाद्य-यंत्रों को मिलाया था।
- फेयरवेल, माई फ्रेंड - जब शंकर ने सत्यजीत रे की मृत्यु के बारे में सुना, तो उन्होंने सहजता से इस एल्बम की रचना की। बाद में इसे एचएमवी द्वारा रिकॉर्ड और रिलीज़ किया गया।

- द साउंड्स ऑफ़ इंडिया - मूल रूप से 1968 में एलपी एल्बम के रूप में रिलीज़ किया गया, 'द साउंड्स ऑफ़ इंडिया' को 1989 में सीडी प्रारूप में डिजिटल रूप से फिर से रिलीज़ किया गया।

जॉर्ज हैरिसन के साथ जुड़ाव

जून 1966 में, मशहूर बैंड बीटल्स के सदस्य जॉर्ज हैरिसन की मुलाकात लंदन में रविशंकर से हुई। हैरिसन ने उनसे दोस्ती की और पंडित से ही सितार सीखना शुरू कर दिया। इस जुड़ाव ने तुरंत ही शंकर और भारतीय संगीत को पश्चिम में अभूतपूर्व लोकप्रियता दिलाई। हैरिसन द्वारा बीटल्स में सितार की शुरुआत ने राग रॉक के रूप में जानी जाने वाली संगीत की एक नई शैली को जन्म दिया। बाद में उन्होंने रविशंकर के निर्माता के रूप में काम करना शुरू कर दिया। हैरिसन ने उन्हें "विश्व संगीत का गॉडफ़ादर" कहा। हैरिसन से तेईस साल बड़े शंकर ने अपने रिश्ते को पिता और पुत्र जैसा बताया।

बांग्लादेश के लिए संगीत कार्यक्रम

1971 में, बांग्लादेश भारतीय और मुस्लिम पाकिस्तानी सेनाओं के बीच सशस्त्र संघर्ष का केंद्र बन गया। हिंसा के मुद्दों के साथ-साथ, देश भयंकर बाढ़ से भी घिरा हुआ था। देश के नागरिकों द्वारा सामना किए जा रहे अकाल और कठिनाई को देखते हुए, शंकर और हैरिसन ने बांग्लादेश के लिए संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया। यह 1 अगस्त को मैडिसन स्क्वायर गार्डन में हुआ और इसमें बॉब डायलन और एरिक क्लैप्टन जैसे कलाकार शामिल हुए। शो से प्राप्त आय, जिसे मोटे तौर पर पहला प्रमुख आधुनिक चैरिटी कॉन्सर्ट माना जाता है, बांग्लादेशी शरणार्थियों की मदद करने के लिए सहायता संगठन यूनिसेफ को दी गई।

इसके अतिरिक्त, प्रदर्शन करने वाले कलाकारों द्वारा की गई रिकॉर्डिंग ने एल्बम ऑफ़ द ईयर श्रेणी के तहत 1973 ग्रैमी पुरस्कार जीता। मुख्यधारा की सफलता 1954 में, रवि शंकर ने सोवियत संघ में एक गायन प्रस्तुत किया। 1956 में,

उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिमी यूरोप में अपनी शुरुआत की। उनकी लोकप्रियता में मदद करने वाला स्कोर भी था, जो उन्होंने प्रसिद्ध भारतीय फिल्म निर्देशक सत्यजीत रे के लिए लिखा था। पश्चिमी दुनिया में पहले से ही भारतीय संगीत के राजदूत, शंकर ने 1960 के दशक में इस भूमिका को बहुत हद तक अपनाया। उस दशक में शंकर ने मोंटेरे पॉप फेस्टिवल में प्रदर्शन किया, जिसने उनकी प्रसिद्धि को और बढ़ा दिया।

राजनीतिक करियर

भारतीय संगीत में उनके महान योगदान के लिए, उन्हें तत्कालीन भारतीय प्रधान मंत्री राजीव गांधी द्वारा राज्यसभा के लिए नामित किया गया था। उन्होंने 12 मई 1986 से 11 मई 1992 तक भारतीय संसद के उच्च सदन के सदस्य के रूप में कार्य किया।

पुरस्कार और सम्मान

- संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार – 1962 में, उन्हें भारत के राष्ट्रीय संगीत, नृत्य और नाटक अकादमी द्वारा दिए जाने वाले संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप – यह एक ही संगठन द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है। उन्होंने यह पुरस्कार वर्ष 1975 में जीता था।
- पद्म भूषण – 1967 में, रविशंकर को भारत के तीसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- पद्म विभूषण – भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण उन्हें वर्ष 1981 में दिया गया था।
- भारत रत्न – 1999 में, सितार वादक को देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- ग्रैमी पुरस्कार – रविशंकर ने अपने जीवनकाल में पाँच ग्रैमी पुरस्कार जीते। 1967 में, येहुदी मेनुहिन के साथ उनके सहयोगी एल्बम ने सर्वश्रेष्ठ चैंबर संगीत प्रदर्शन के तहत ग्रैमी जीता। 1973 में, 'कॉन्सर्ट फॉर बांग्लादेश' ने एल्बम ऑफ द ईयर का पुरस्कार जीता। 2002 में, उनके एल्बम, 'फुल सर्कल: कार्नेगी हॉल

2000' ने सर्वश्रेष्ठ विश्व संगीत एल्बम का पुरस्कार जीता और 2013 में, 'द लिविंग रूम सेशंस' ने एक बार फिर सर्वश्रेष्ठ विश्व संगीत एल्बम की श्रेणी में पुरस्कार जीता।

- लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड – उन्हें 55वें वार्षिक ग्रैमी अवार्ड्स में इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मृत्यु और विरासत

रवि शंकर का 11 दिसंबर, 2012 को सैन डिएगो, कैलिफोर्निया में 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। संगीतकार कथित तौर पर ऊपरी श्वसन और हृदय संबंधी बीमारियों से पीड़ित थे और उनकी मृत्यु से पहले के दिनों में हृदय वाल्व को बदलने के लिए सर्जरी की गई थी। उनका अंतिम प्रदर्शन कैलिफोर्निया के टेरेस थिएटर में उनकी बेटी के साथ था। उनकी बेटी अनुष्का शंकर भी सितार वादक और संगीतकार हैं। रवि शंकर की विरासत को अब यह प्रतिभाशाली संगीतकार आगे बढ़ा रहा है।

12.3.2 भारतरत्न पं. रवि शंकर पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति

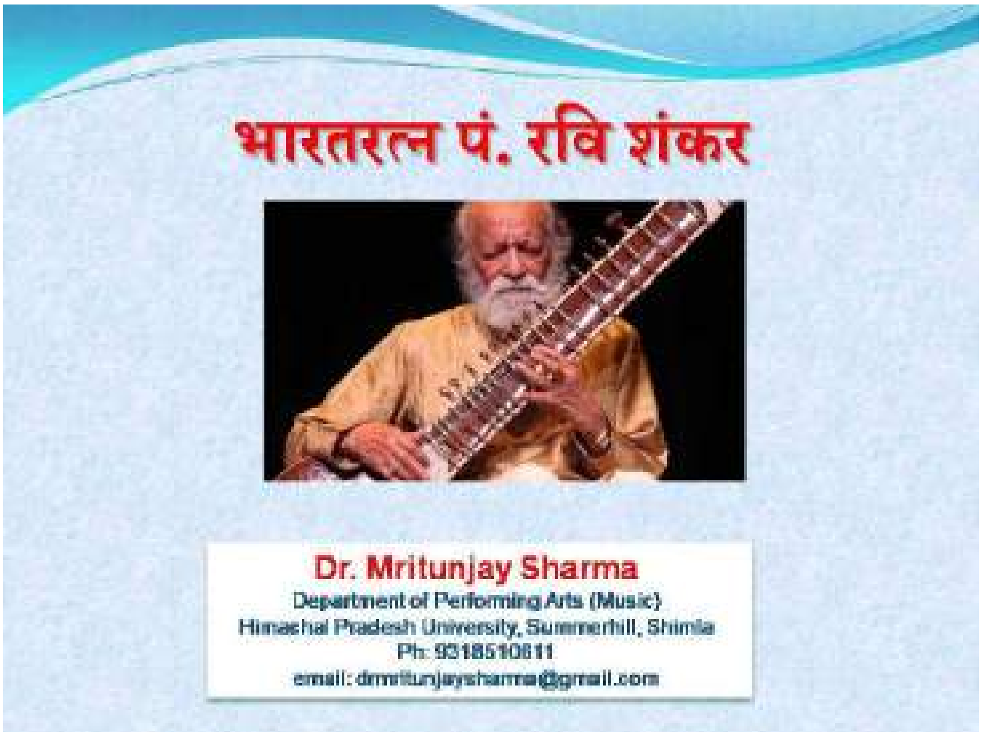

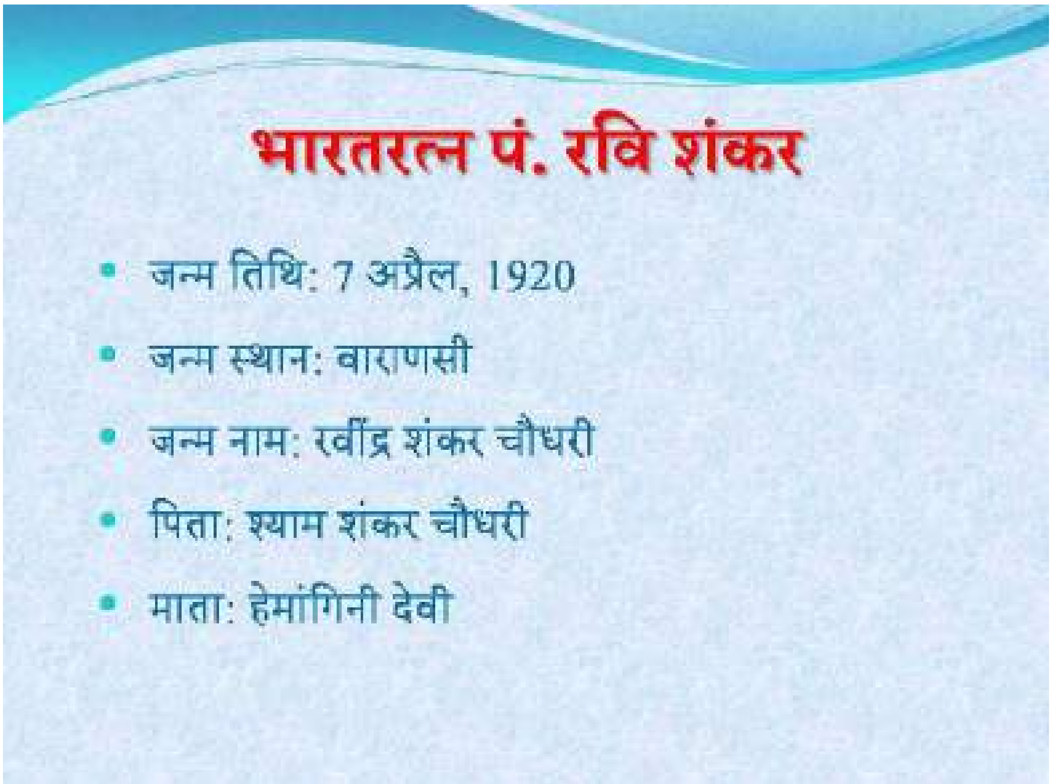
भारतरत्न पं. रवि शंकर
जन्म तिथि: 7 अप्रैल, 1920
जन्म स्थान: वाराणसी
जन्म नाम: रवींद्र शंकर चौधरी
पिता: श्याम शंकर चौधरी
माता: हेमांगिनी देवी

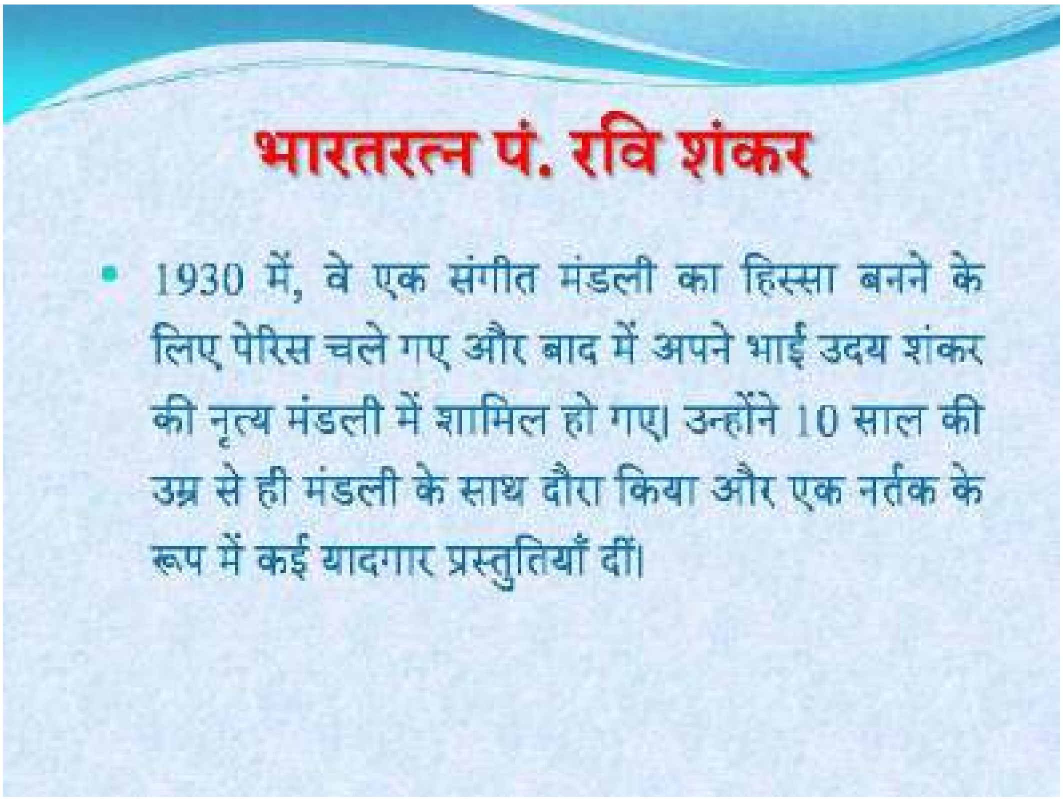
भारतरत्न पं. रवि शंकर
1930 में, वे एक संगीत मंडली का हिस्सा बनने के लिए पेरिस चले गए और बाद में अपने भाई उदय शंकर की नृत्य मंडली में शामिल हो गए। उन्होंने 10 साल की उम्र से ही मंडली के साथ दौरा किया और एक नर्तक के रूप में कई यादगार प्रस्तुतियाँ दीं।

भारतरत्न पं. रवि शंकर

- रविशंकर को सितार से बहुत बाद में परिचय हुआ जब वे 18 साल के थे।
- कोलकता में उन्होंने अमिय कांति भट्टाचार्य को बजाते हुए सुना। प्रदर्शन से प्रभावित होकर, फैसला किया कि उन्हें भी सितार सीखना चाहिए।
- बाद में उस्ताद अल्लाऊद्दीन खाँ से सितार सीखा और इस तरह सितार उनके जीवन में आया और उनके अंतिम सांस तक उनके साथ रहा।

भारतरत्न पं. रवि शंकर

- मुंबई में उन्होंने इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन के लिए काम किया।
- 1946 तक बैले के लिए संगीत रचना शुरू की।
- वे नई दिल्ली रेडियो स्टेशन ऑल इंडिया रेडियो (AIR) के निदेशक बन गए, इस पद पर वे 1956 तक रहे।

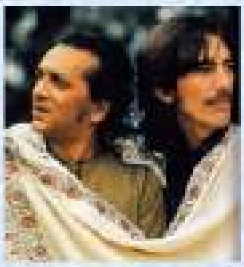

भारतरत्न पं. रवि शंकर

- आकाशवाणी में अपने कार्यकाल के दौरान, शंकर ने ऑर्केस्ट्रा के लिए ऐसे संगीत की रचना की जिसमें सितार और अन्य भारतीय वाद्ययंत्रों को शास्त्रीय पश्चिमी वाद्यों के साथ मिलाया गया।
- इसी अवधि के दौरान, उन्होंने अमेरिकी मूल के वायलिन वादक येहुदी मेनुहिन के साथ संगीत का प्रदर्शन और लेखन शुरू किया।

भारतरत्न पं. रवि शंकर

उनके कुछ सबसे ज़्यादा बिकने वाले एल्बम इस प्रकार हैं:

- श्री रागाज़ - वर्ष 1956 में रिलीज़ हुआ, 'श्री रागाज़' उनका पहला एलपी एल्बम था। इसे वर्ष 2000 में एंजेल रिकॉर्ड्स द्वारा डिजिटल प्रारूप में फिर से रिलीज़ किया गया था।
- ताना माना - इस एल्बम का श्रेय मूल रूप से 'द रविशंकर प्रोजेक्ट' को दिया गया था और इसे 1987 में रिलीज़ किया गया था। 'ताना मन' पंडित द्वारा एक प्रयोगात्मक काम था, जिन्होंने 80 के दशक के इलेक्ट्रॉनिक संगीत के साथ पारंपरिक वाद्य-यंत्रों को मिलाया था।

भारतरत्न पं. रवि शंकर

- फेयरवेल, माई फ्रेंड - जब शंकर ने सत्यजीत रे की मृत्यु के बारे में सुना, तो उन्होंने सहजता से इस एल्बम की रचना की। बाद में इसे एचएमवी द्वारा रिकॉर्ड और रिलीज़ किया गया।
- द साउंड्स ऑफ़ इंडिया - मूल रूप से 1968 में एलपी एल्बम के रूप में रिलीज़ किया गया, 'द साउंड्स ऑफ़ इंडिया' को 1989 में सीडी प्रारूप में डिजिटल रूप से फिर से रिलीज़ किया गया।

भारतरत्न पं. रवि शंकर

राजनीतिक करियर

- भारतीय संगीत में उनके महान योगदान के लिए, उन्हें तत्कालीन भारतीय प्रधान मंत्री राजीव गांधी द्वारा राज्यसभा के लिए नामित किया गया था। उन्होंने 12 मई 1986 से 11 मई 1992 तक भारतीय संसद के उच्च सदन के सदस्य के रूप में कार्य किया।

भारतरत्न पं. रवि शंकर

- संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप – वर्ष 1975
- पद्म भूषण – 1967 में
- पद्म विभूषण – वर्ष 1981 में
- भारत रत्न – 1999 में

भारतरत्न पं. रवि शंकर

- ग्रैमी पुरस्कार – रविशंकर ने अपने जीवनकाल में पाँच ग्रैमी पुरस्कार जीते।
- 1967 में
- 1973 में
- 2002 में
- 2013 में
- लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड – उन्हें 55वें वार्षिक ग्रैमी अवार्ड्स में इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भारतरत्न पं. रवि शंकर

- रवि शंकर का 11 दिसंबर, 2012 को सैन डिएगो, कैलिफोर्निया में 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

धन्यवाद

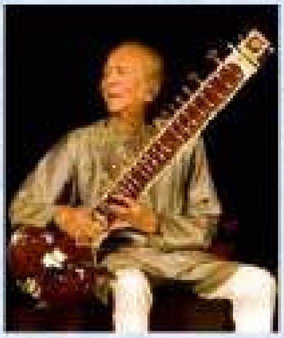

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 पंडित पं. रवि शंकर का जन्म कब हुआ?

1) 4 फरवरी 1923

2) 9 अप्रैल, 1920

3) 4 फरवरी 1921

4) 7 अप्रैल, 1920

12.2 पंडित पं. रवि शंकर के गुरु का नाम क्या था?

1) गोपाल नायक

2) उस्ताद अला रक्खा खां

3) उस्ताद अलाउद्दीन खां

4) सभी

12.3 पंडित पं. रवि शंकर किस घराने से संबंध रखते हैं?

1) मेवाड़

2) मेहर

3) दिल्ली

4) ग्वालियर

12.4 पंडित पं. रवि शंकर को विभूषण कब मिला?

1) 1981

2) 1982

3) 1992

4) 1962

12.5 पंडित पं. रवि शंकर को पद्मभूषण कब मिला?

1) 1985

2) 2004

3) 1969

4) 1967

12.6 पंडित पं. रवि शंकर को भरत रत्न पुरस्कार कब मिला?

1) 2007

2) 2004

3) 1999

4) 1998

12.7 पंडित पं. रवि शंकर का देहांत कब हुआ?

1) 24 जनवरी 2012

2) 11 दिसंबर 2012

3) 24 जनवरी 2010

4) 11 दिसंबर 2011

12.4 सारांश

पावर प्वाइंट प्रस्तुति एक अत्यधिक प्रभावी माध्यम है जिसके द्वारा महान संगीतकारों के जीवन और योगदान को सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसका उपयोग शिक्षा और व्यावसायिक संदर्भों में जानकारी को समझाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जहां विचारों को स्पष्टता से और आकर्षकता से प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति या समूह अपने संदेश को साझा करते हैं और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होते हैं।

12.5 शब्दावली

- टेक्स्ट (Text): स्लाइड पर प्रस्तुत जानकारी या मुख्य बिंदु को लिखित रूप में प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त पाठ।
- प्रस्तुति (Presentation): जब कोई व्यक्ति या समूह अपने विचारों, जानकारी या अनुसंधान को सामर्थ्यपूर्ण रूप से स्लाइड्स के माध्यम से दूसरों के सामने प्रस्तुत करता है।
- स्लाइड (Slide): पावर प्वाइंट प्रस्तुति का मुख्य भाग जिसमें विचार, जानकारी या डेटा को ग्राफ़िक्स, पाठ, और अन्य साधनों के साथ साझा जाता है।

12.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 उत्तर: 4)

12.2 उत्तर: 3)

12.3 उत्तर: 2)

12.4 उत्तर: 1)

12.5 उत्तर: 4)

12.6 उत्तर: 3)

12.7 उत्तर: 2)

12.7 संदर्भ

https://www.culturalindia.net/indian-music/classical-singers/ravi-shankar.html

https://en.wikipedia.org/wiki/Ravi_Shankar

माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन. (2022). पावर प्वाइंट [कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर]. पुनः प्राप्त किया गया from https://www.microsoft.com/powerpoint

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

12.8 अनुशंसित पठन

माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन. (2022). पावर प्वाइंट [कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर]. पुनः प्राप्त किया गया from https://www.microsoft.com/powerpoint

https://www.culturalindia.net/indian-music/classical-singers/ravi-shankar.html

https://en.wikipedia.org/wiki/Ravi_Shankar

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

12.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख संगीतकार भारतरत्न पं. रवि शंकर के जीवन पर एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति प्रस्तुत करें

प्रश्न 2. भारत के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख संगीतकार भारतरत्न पं. रवि शंकर के योगदान पर एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति प्रस्तुत करें

16 महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

प्रश्न 1. किन्हीं दो देशभक्ति गीतों को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 2. किसी दो देशभक्ति गीतों की स्वरलिपि को लिखिए।

प्रश्न 3. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की स्वरलिपि को लिखिए।

प्रश्न 5. पावर प्वाइंट प्रस्तुति की प्रमुख विशेषताएँ और उनका उपयोग संगीत में कैसे फायदेमंद हो सकता है?

प्रश्न 6. पावर प्वाइंट प्रस्तुति में चित्र, ग्राफ़िक्स, और मल्टीमीडिया के उपयोग का महत्व और इससे प्रभावी प्रस्तुति कैसे बनाई जा सकती है?

प्रश्न 7. किसी सांगीतिक विषय में दो पावर प्वाइंट प्रस्तुतियां बनाएं।

प्रश्न 8. तबला वाद्य का परिचय व इतिहास लिखिए।

प्रश्न 9. तबला का वाद्य का इतिहास और इसके अंगों का विस्तार चित्र सहित वर्णन करें।

प्रश्न 10. हारमोनियम वाद्य का परिचय तथा इतिहास लिखिए।

प्रश्न 11. हारमोनियम का वाद्य का इतिहास और इसके अंगों का विस्तार चित्र सहित वर्णन करें।

प्रश्न 12 किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 13. किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को स्वरलिपि में लिखिए।

प्रश्न 14. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 15. कहरवा ताल के किसी एक देशभक्ति गीत की धुन को स्वरलिपि में लिखिए।

प्रश्न 16. भारत के शास्त्रीय संगीत के किसी एक भारतरत्न प्राप्त संगीतकार के जीवन तथा योगदान पर एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति प्रस्तुत करें